पंचम अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों का शिल्प-विधान

5.1. शिल्प परिभाषा एवं स्वरूप

5.2. प्रभा खेतान के उपन्यासों का शिल्प विधान

5.2.1. कथानक

5.2.2. चरित्र योजना

5.2.3. संवाद

5.2.4. देशकाल वातावरण

5.2.5. भाषा शैली

5.2.6. उद्‌देश्य

5.3. प्रभा खेतान का भाषा प्रयोग

5.3.1. मुहावरे

5.3.2. कहावते

5.3.3. सूक्तियाँ

5.3.4. सार्थक-निरर्थक शब्द

5.3.5. शब्द पुनरूक्तियाँ

5.3.6. अंग्रेजी शब्द

5.3.7. अंग्रेजी वाक्य

5.3.8. उर्दू, अरबी तथा फारसी के शब्द

5.3.9. मारवाड़ी भाषा के शब्द

5.3.10 मारवाड़ी भाषा के वाक्य

5.3.11 बंगाली भाषा के शब्द

5.3.12 बंगाली भाषा के वाक्य

5.3.13. बिहारी भाषा के वाक्य

5.3.14. बंगाली एवं मारवाड़ी मिश्रित वाक्य

5.3.15 लोकगीतों का समावेश

5.3.16 संस्कृत के शब्द

5.3.17. भदेश भाषा के शब्द

5.3.18 आक्रोशजन्य भाषा के वाक्य

5.3.19 अर्थ व्यंजक विचारवान भाषा

5.4. शैली प्रयोग

5.4.1. वर्णनात्मक शैली

5.4.2. भावात्मक शैली

5.4.3. चित्रात्मक शैली

5.4.4. प्रश्नात्मक शैली

5.4.5. नाट्यात्मक शैली

5.4.6. व्यंग्य शैली

5.4.7. विश्लेषणात्मक शैली

5.4.8. पूर्वदीप्ति शैली (फ्लैश बॅक)

5.4.9. आत्मकथात्मक शैली

5.4.10 पत्रात्मक शैली

5.4.11 डायरी शैली

5.4.12. काव्यात्मक शैली

5.4.13. एकरसता पूर्ण भाषाशैली

5.5.शीर्षक एवं उसकी सार्थकता

5.5.1. आओ पेपे, घर चलें

5.5.2. तालाबंदी

5.5.3. अग्निसंभवा

5.5.4. एड्स

5.5.5. छिन्नमस्ता

5.5.6. अपने-अपने चेहरे

5.5.7 पीली आंधी

5.5.8. स्त्री-पक्ष

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों का शिल्प-विधान

प्रस्तावना-

साहित्यकार के सृजन कर्म पर उसके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है। साहित्यकार अपने भावों को अपनी विशेष भाषा शैली में पाठक तक संप्रेषित करता है। उसकी सफलता जहाँ एक ओर उसके द्वारा चुने गए कथ्य की विशेषताओं पर निर्भर होती है, वहाँ दूसरी ओर उसके शिल्प संयोजन का भी विशेष महत्व होता है।

उपन्यासकार अपने विषय को शिल्प के माध्यम से ही संप्रेषित एवं उद्घाटित करता है। अतः उपन्यास के शिल्प विवेचन के बिना उपन्यास की चर्चा अधूरी मानी जाएगी। उपन्यास के शिल्प में वह शक्ति होती है जो पाठक को आदि से अंत तक बाँधकर रखती है। इसलिए शिल्प उपन्यास का एक महत्वपूर्ण अंग है। उपन्यास में लेखक अपनी अनुभूतियों और भावों की (आंतरिक स्वरूप) अभिव्यक्ति शिल्प या टेकनीक (बाह्य स्वरूप) के माध्यम से करता है। उपन्यास के आंतरिक स्वरूप के साथ-साथ उसका बाह्य स्वरूप भी मेल खाने वाला होना चाहिए। कथ्य या विषय के प्रस्तुतीकरण में उपन्यास का बाह्य स्वरूप, शिल्प भी सहायक होना चाहिए।

20 वीं सदी में उपन्यास का पारंपारिक स्वरूप परिवर्तित हुआ है। आज शिल्प को भी कथ्य के समान ही महत्व दिया जाने लगा है और शिल्प की चर्चा के बिना उपन्यास की समीक्षा अधूरी मानी जाती है। आधुनिक उपन्यासकारों के लिए उपन्यास केवल मानव जीवन का चित्र ही नहीं बल्कि एक कला रूप भी है। उसके लिए 'क्या कहना है' यही नहीं बल्कि 'कैसे कहना है' यह भी महत्वपूर्ण है। इसलिए आज का आलोचक भी उपन्यास को एक कलाकृति के रूप में परखना चाहता है।

उपन्यास मूलतः जीवन से जुड़ा है। इसलिए प्रारंभ में जब उपन्यास लिखे गए तब उनमें सीधी सरल, इकहरी वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग किया गया। पाठक कहानी या चरित्र के लिए उपन्यास पढ़ता था न की भाषा के वैशिष्टय के लिए। इसलिए उपन्यास की समीक्षा में भाषा का विचार बहुत कम होता रहा। किंतु आधुनिक

उपन्यासों में हमें भाषा का जो नया रूप नजर आता है उसपर व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता है।

उपन्यास में वर्णनात्मकता होती हैं, क्योंकि इसमें अनुभूति का संप्रेषण महत्वपूर्ण होता है। आज का उपन्यासकार भाषा के प्रति विशेष सजग हुआ है। अनुभव को संप्रेषित करने वाली मूर्त, पारदर्शी भाषा की तलाश वह करने लगा है। इसके लिए वह गद्य की भाषा में काव्य भाषा के उपकरण-प्रतीक, बिंब, संकेतों का प्रयोग करके भाषा में कसावट, सूक्ष्मता और संवेदना लाने का प्रयास कर रहा है। फलस्वरूप आज के उपन्यासों में भाषा के नये-नये प्रयोग और रंग-रूप नजर आ रहे है। वर्णन के स्तर से उठकर उपन्यास की भाषा व्यंजना क्षमता से परिपूर्ण हो रही है। डॉ.कृष्णा जाखड़ कहती हैं-"साहित्यकार की भावभिव्यक्ति ज्यों की त्यों पाठक तक पहुँच पाती है या नहीं यह उसकी भाषिक संरचना पर निर्भर करता है। सहज ग्राह्य भाषा पाठक को सीधा लेखक के भावों से जोड़ती है।"[1]

भाषा के समान शैली के क्षेत्र में भी नये-नये प्रयोग उपन्यासकारों द्वारा हो रहे है। कथानक के अनुरूप रचना शैलियों का प्रयोग करते हुए रचनाकार अपनी शैली के प्रति सजगता का भी परिचय दे रहे है। उपन्यासकार भोगे हुए जीवन को उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इस अभिव्यक्ति के लिए वह अनेक उपकरण जुटाता है। इन तत्वों का समाहार करने के लिए उपन्यासकार प्रयास नहीं करता बल्कि ये तत्व स्वतः परस्पर समन्वित होकर उपन्यास शिल्प का निर्माण करते हैं।

प्रभा खेतान ने भाषा और शैली के प्रति जागरूकता दिखाकर अपने औपन्यासिक कथ्य के अनुरूप ही भाषा शैली का चयन कर अपनी अभिव्यक्ति सामर्थ्य को प्रकट किया है। उनका साहित्य वैविध्यपूर्ण है अतः उनकी भाषा में भी विविधता है। उनका साहित्य अपनी सहज एवं बोधगम्य भाषा व विशिष्ट शैली के कारण हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाता है। इसी तथ्य को हम इस अध्याय में प्रमाणित करेंगे।

5.1. शिल्प परिभाषा एवं स्वरूप-

शिल्प विधि अंग्रेजी के 'टेकनीक' (Technique) शब्द का हिंदी रूप है। इसका संबंध कृति की रचना पद्धति से है। हिंदी में शिल्प, शिल्प विधि, शिल्प विधान आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इन शब्दों के लिए अंग्रेजी में 'आर्ट', 'एक्सप्रेशन', 'टेकनीक', 'क्राफ्ट' आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इनमें शिल्प विधि के लिए अंग्रेजी 'टेकनीक' शब्द ज्यादा उचित लगता है, क्योंकि "शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है किसी चीज के बनाने या रचाने का ढंग अथवा तरीका। किसी वस्तु के रचने की जो-जो प्रक्रियाएँ होती है, उनके समुच्चय को शिल्प विधि के नाम से पुकारा जाता है। सरल भाषा में यदि कहा जाए तो शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तक से है।"[2] साहित्य अथवा कला के संदर्भ में प्रयुक्त होने से शिल्प-विधि का अर्थ हो जाता है-साहित्यिक कृति अथवा कलात्मक वस्तु के रचने का तरीका या ढंग। कला की रचना में जिन तरीकों, रीतियों और विधियों का उपयोग किया जाता है, वे ही उस कला की शिल्प-विधि के नाम से पुकारी जाती है।

डॉ.सत्यपाल चुघ इसके संबंध में लिखते हैं -"शिल्प विधि अंग्रेजी के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रूप है। इसका तात्पर्य रचना पद्धति से है।"[3] अच्छे 'टेकनीक' का अर्थ सही बात, सही ढंग से सही समय पर कहना है। विषय को पाठकों के सामने शिल्प ही लाता है। इसीलिए विषय वस्तु को कला रूप में ढालने की प्रक्रिया को शिल्प-विधि कहा जाता है। इस तरह टेकनीक के लिए शिल्प विधि, पद्धति, रचना, प्रणाली आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है-शैली से ज्यादा व्यापक वह उपादान जिसके द्वारा रचनाकार अपनी भावनाओं को किसी विशेष ढंग से व्यक्त करता है। हाथ से किसी वस्तु को बनाने की पद्धति को शिल्प विधि कहते हैं। शब्द रचना के आधार पर शिल्प से तात्पर्य हस्तकौशल, कारीगरी तथा विधि से लिया जाता है। इसलिए शिल्प विधि के अंतर्गत वे समस्त तत्व आ जाते है, जो उस कलाकृति की निर्मिति में सहायक होते हैं।

शिल्प विधि का संबंध साहित्य की रूप योजना से है। रूप योजना कथ्य को अधिकाधिक प्रभावी बनाने में ही सार्थक होती है। अर्थात साहित्य निर्माण में शिल्प

सौष्ठव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यहाँ पर शिल्प संबंधी कतिपय धारणाओं पर विचार करना समीचीन होगा।

डॉ.जवाहर सिंह ने शिल्प विधि की परिभाषा देते हुए कहा है- "शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पद्धतियों से है, जिनके माध्यम से शिल्पकार या रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियाँ, मन प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक संवेद और सौंदर्य मूलक बनाता है।"[4] हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार ने शिल्प-विधि और कलाकृति की रचना की विधि को समानार्थक मानकर शिल्प विधि की व्याख्या की है। 'टेकनीक ढ़ाँचे के नियमों का नाम है। पर ढाँचे की जानकारी की उपयोगिता इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आये।"[5] शिल्प-विधान रचना का वह व्यापक तत्व है जिसके माध्यम से रचनाकार अपनी संप्रेष्य वस्तु को सफल अभिव्यक्ति और प्रभावन्विति को संभव बनाता है। जब भाव और अनुभूति की प्रेरणा मनुष्य के मन और मस्तिष्क में घनीभूत होती है तब वह उसकी अभिव्यक्ति में संलग्न होता है। अभिव्यक्ति के लिए वह कभी वाणी का सहारा लेता है, कभी आकृति का, लेकिन वह अपने भाव प्रकाशन में अधिक से अधिक रोचकता, आकर्षकता और प्रभाव लाने के लिए अनेक रूप-विधानों की योजना करता है।

संक्षेप में शिल्प-विधि का अर्थ वह विधि या तरीका है जिसके द्वारा रचनागत लक्ष्य की पूर्ति की जाती है। शिल्प रचनाकार की प्रतिभा, सृजनशील कल्पना और अविरत साधना का परिणाम होता है, जिसके द्वारा वह अपने रचनात्मक लक्ष्य को प्राप्त करता है। प्रत्येक रचनाकार अपने संप्रेष्य को सफल अभिव्यक्ति देने के लिए अपने अनुकूल शिल्प का संधान करता है। शिल्प पाठकों की अभिरूचि के अनुसार साहित्य के चुनाव में केवल सहायक ही नहीं होता, अपितु शिल्पगत विशेषताओं के आधार पर उसे स्थायित्व भी प्रदान करता है। यही शिल्पगत आकर्षण रचना को आद्योपांत पढ़ने के लिए पाठक को विवश कर देता है।

5.2. प्रभा खेतान के उपन्यासों का शिल्प विधान-

प्रभा खेतान नारीवादी लेखन परंपरा की यथार्थवादी लेखिका है। उनके साहित्य का कथ्य जीवन की सजीव कथा है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी जीवन की त्रासदियों का सजीव एवं स्वाभाविक ढंग से चित्रण किया है। प्रभा खेतान रूपवादी कला की समर्थक नहीं, बल्कि जीवनवादी सर्जना की पक्षधर है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वे शिल्प के महत्व को सापेक्षित स्थिति में ही स्वीकार करती हैं अर्थात उनका शिल्प विषय वस्तु का उपकारक होकर ही अपनी सार्थकता को सिद्ध करता है। प्रभा के साहित्य में स्थान, समय, एवं पात्रों की स्थिति के अनुसार शब्द आते हैं। जहाँ स्थानीय शब्दों की भरमार है वही विदेशी शब्द भी काफी संख्या में आए हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त लोकोक्ति मुहावरें, लोकगीत आदि स्थानीय संस्कृति को व्यक्त करते हैं।

व्याकरण की दृष्टि से प्रभा की भाषा उत्कृष्टता के शिखर पर नहीं पहुँच पाई। उनकी भाषा पांडित्यपूर्ण नहीं है। फिर भी सहज शब्दों में भावों के अनुरूप ढली अनुभवों पर आधारित उनकी भाषा अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुई है। प्रभा जी के सर्जनात्मक विचारों को लेकर गोपाल राय लिखते हैं -"शिल्प और भाषा की दृष्टि से प्रभा खेतान ने कोई चौंकानेवाला प्रयोग नहीं किया है, पर अपने विषय के अनुरूप शिल्प और भाषा के चुनाव में उन्होंने सर्जनात्मक सजगता का परिचय दिया है।"[6] इसलिए कृष्णा जाखड़ ने कहा है, "प्रभा ने कहा साहित्य जनसामान्य से लेकर बौद्धिक वर्ग तक के लिए है।"[7]

कथानक, चरित्र योजना, कथोपकथन, देशकाल, वातावरण, भाषाशैली, उद्देश्य के आधार पर प्रभा खेतान के उपन्यासों के शिल्प विधान का अध्ययन किया जा सकता है। प्रभा खेतान का शिल्प हिंदी उपन्यासों की भीड़ में खो जानेवाला न होकर अपने नयेपन का स्वतंत्र अस्तित्व बोध कराने वाला है। उनके शिल्प में उल्लेखनीय बात यह है कि वह उनके जीवन से संबंधित एवं संस्मरणात्मक रूप में प्रस्तुत हुआ है।

5.2.1. कथानक-

उपन्यास में वर्णित सभी घटनाओं, कार्य व्यापारों का समावेश कथानक के अंतर्गत होता है। कथानक उपन्यास का मूल तत्व है। उपन्यास के कथानक का प्रस्तुतिकरण आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक, नाट्यात्मक, पत्रात्मक, डायरी आदि अनेक शैलियों में किया जाता है। उपन्यासकार कथानक का चयन समसामायिक जीवन में से करता है। कौतुहल एवं जिज्ञासा उपन्यास के कथानक की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसके अभाव में कथानक असफल माना जाता है।

आकार ही दृष्टि से प्रभा खेतान के उपन्यासों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

अ. बृहदकार उपन्यास

1. पीली आंधी
2. अपने-अपने चेहरे
3. छिन्नमस्ता
4. आओ पेपे, घर चलें
5. तालाबंदी
6. स्त्री-पक्ष

ब. लघु उपन्यास

1. एड्स
2. अग्निसंभवा

प्रभा खेतान के बृहद् उपन्यासों में जीवन के विविध पक्षों, सामाजिक विशेषताओं, सांस्कृतिक परिस्थितियों, राजनीतिक प्रभावों एवं व्यवसायिक क्षेत्रों का विस्तृत चित्रण हुआ है। उपकथाओं के नियोजन से संपूर्ण औपन्यासिक परिदृश्य को व्यापकता प्रदान की गई है। जब कि लघु उपन्यासों में कथानक को कुछ प्रमुख घटनाओं और जीवन के कतिपय विशिष्ट पक्षों को रेखांकित करने का उद्देश्य दिखाई देता है। कथानक की दृष्टि से उनकी प्रमुख विशेषता यह है कि उनके उपन्यास चाहे

बड़े हो या छोटे उनमें प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में संदर्भों, प्रसंगों, घटनाओं का नियोजन अत्यंत सुयोग्य पद्धति से किया है। उनके उपन्यास अत्यंत कलात्मक है। अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति में पूरी तरह से सफल हुए है। जिन घटनाओं अथवा संदर्भो को उन्होंने चित्रित किया हैं, वे मुख्य कथा को प्रभावोत्पादक और रोचक बनाने में समर्थ है।

उनका 'पीली आंधी' राजस्थान के अकाल, राजे-रजवाड़े द्वारा शोषण, मारवाड़ी बाणियों की संस्कृति, जन-जीवन, उस समाज की रीति-नीति, तीज-त्यौहार, लोक-व्यवहार, अपनी जाति की पत रखने के लिए व्यापार और कारोबार को बढ़ाते रहने की जातीय जीवट, बोली-बानी, खान-पान, चौका-चूल्हा, वेशभूषा, आभूषण प्रेम आदि का समुच्चय है। यह वर्णन उस समय की संपूर्ण परिस्थिति को साकार कर देता है। 'स्त्री-पक्ष' इस उपन्यास में नायिका वृंदा के माध्यम से नारी जीवन की दशा और त्रासदी वर्णित है। उनका 'छिन्नमस्ता' और 'अपने-अपने चेहरे' का कथानक उनका भोगा हुआ यथार्थ है। 'एड्स' उपन्यास के कथानक में विदेशों में भी नारी अकेलेपन एवं पति द्वारा उपेक्षित एवं प्रताड़ित है यह बताते हुए 'एड्स' जैसे समसामायिक प्रश्न को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। 'अग्निसंभवा' में चीन की राजनीति, वहाँ की क्रांति, मार्क्सवादी दृष्टिकोण के साथ-साथ आइवी के टैक्सी ड्रायव्हर से ब्रॉंच मैनेजर बनने तक की विकास यात्रा की घटनाओं का निरूपण है। 'आओ पेपे, घर चलें' इस उपन्यास में अमरिकी औरत के जीवन के भयानक सच को विविध स्त्री पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। 'तालाबंदी' उपन्यास में व्यवसायिक दाँवपेच की सच्चाई है।

इन सभी उपन्यासों के कथानक की विशेषता यह है, कि प्रत्येक घटना मूल कथा की सहयोगिनी है। अनावश्यक फैलाव अथवा अप्रासंगिक विस्तार कहीं भी नहीं है। उनके उपन्यासों में कथानक का विकास अत्यंत स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण रीति से हुआ है। अनेक छोटी-छोटी घटनाओं के संगठन में एकसूत्रता है। उपन्यासों की संरचना में अनेक लघुकथाओं के माध्यम से लोगों की जीवन प्रणाली और नियति को अभिव्यक्त किया गया है। प्रभा खेतान के उपन्यासों के कथानक की एक विशेषता यह

भी है कि वे वैयक्तिक जीवन के अनुभवों पर आधारित है। कथानक का विकास क्रम भी प्राय: अनुभवों की क्रमिक शृंखला का अनुसरण करता है। कथानक के नियोजन में प्रारंभ, विकास, चरम सीमा, निगति और अंत इन सोपानों का पालन किया गया है।

5.2.2. चरित्र योजना-

उपन्यास का केंद्र-बिंदू मानव जीवन होता है। पात्र अथवा चरित्र योजना को महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। उपन्यासकार चरित्र-योजना के माध्यम से मानव जीवन के विविध रूपों को उपस्थित करता है। चरित्रों के माध्यम से मानव चरित्र पर प्रकाश ड़ालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यासकार का उद्देश्य होता है। डॉ.रामलखन शुक्ल के अनुसार-"उपन्यासकार अपनी रचनाओं में पात्रों की खोज करता है, वह उनका निर्माण नहीं करता।"[8] पात्रों के चरित्र में अन्तर्द्वद्व की सृष्टि उपन्यास में सशक्तता उत्पन्न करती है। उपन्यास में चित्रित पात्रों की अनेक विशेषताएँ होती है। उनमें अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्राणता, सहृयता, मौलिकता, सजीवता, यथार्थता, सशक्तता, बौद्धिकता आदि गुणों का होना आवश्यक है। ये सभी गुण प्रभा खेतान के पात्रों में दृष्टिगत होते है।

उपन्यास में पात्रों की संख्या उसके कथानक पर निर्भर होती है। "उपन्यास में पात्रों की संख्या में कमी अथवा वृद्धि इस बात पर निर्भर होती है कि उपन्यास का आकार कितना है, क्योंकि पात्रों की योजना और औपन्यासिक आकार में संतुलन आवश्यक होता है। अनुभूति की आंतरिकता और घटनात्मक बहुरूपता विश्व उपन्यास के स्वरूप की विशिष्टता को प्रकट करता है, परंतु लघु उपन्यास में अधिक पात्रों की योजना कभी भी संगत नहीं कही जा सकती इसी प्रकार के बृहत् उपन्यासों में स्वभावत: ही पात्रों के क्षेत्र और संख्या में वृद्धि हो जाती है।"[9]

प्रभा खेतान के 'पीली आंधी', 'तालाबंदी', 'छिन्नमस्ता' एवं 'आओ पेपे, घर चलें' में पात्रों की संख्या अधिक है, तो 'स्त्री-पक्ष', 'एड्स' एवं 'अग्निसंभवा', 'अपने-अपने चेहरे' में पात्रों की संख्या कम है। उनके बहुत-से उपन्यासों में 'नारी' प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित की गई है। 'अग्निसंभवा' में उपन्यास की नायिका 'आइवी' है। 'छिन्नमस्ता' में 'प्रिया' के अस्तित्व के लिए किए गए संघर्ष का चित्रण है। 'अपने-

अपने चेहरे' में रमा प्रमुख नारी पात्र है। 'पीली आंधी' में चाची, बड़ी माँ एवं सोमा इन तीन पीढ़ियों के नारी पात्र प्रमुख हैं। 'स्त्री-पक्ष' में 'वृंदा' के जीवन की त्रासदी का चित्रण है।

प्रभा खेतान के चरित्रांकन की विशेषता है कि वे अपनी परिस्थितियों की टकराहट के साथ विकसित होते हैं। औपन्यासिक संदर्भों में उनकी मानसिकता नितांत स्वाभाविक प्रतीत होती है। यदि कोई पात्र परिस्थितियों के सम्मुख पराजित या विवश है, तो उसकी पृष्ठभूमि उसका साक्ष्य प्रस्तुत करती है। आइलिन, प्रभा, एलिजा, मरील, हेल्गा बेरी, कैथी, नैन्सी, लारा (आओ पेपे, घर चलें) श्यामबाबू, सुमित्रा, पप्पू (तालाबंदी) आइवी, शिव, मिस्टर डिक्रे, प्रभा (अग्निसंभवा), सहयात्री एण्डू एवं प्रभा (एड्स) प्रिया, नरेंद्र (छिन्नमस्ता), रमा, गोयनका (अपने-अपने चेहरे), आदि इसी तरह के पात्र है। इन पात्रों की विवशता अथवा पराजय उनकी विकल्पहीन स्थिति के कारण है।

प्रभा खेतान ने बाह्य कार्य-कलापों की भाँति अपने चरित्रों के अंतर्द्वंद्व को भी बड़ी सफलता के साथ अंकित किया है। प्रभा (आओ पेपे, घर चलें), श्याम बाबू (तालाबंदी) आइवी (अग्निसंभवा) प्रिया (छिन्नमस्ता), रमा (अपने-अपने चेहरे), सोमा (पीली आंधी) आदि इसी प्रकार के पात्र है, जो अपनी व्यवहारिक क्रियाओं के साथ आत्ममंथन की गहन प्रक्रिया से गुजरते है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रभा खेतान के औपन्यासिक चरित्रों में सभी चारित्रिक गुणों का पूर्ण परिपाक दिखाई देता है।

5.2.3. संवाद-

औपन्यासिक तत्वों में संवाद इस तत्व का विशेष महत्व है। संवादों में न केवल संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता, रोचकता होती है, अपितु कथानक में निहित विषय की गंभीरता और पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को भी चित्रित किया जाता है। सफल कथोपकथन का आधार मनोविज्ञान का ज्ञान होता है। सहजता, उपयुक्तता, अनुकूलता, संबंद्धता, सरसता, स्वाभाविकता, नाटकीयता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता आदि अच्छे संवाद के गुण माने जाते हैं।

संवाद को जीवंत बनाने के लिए प्रभा जी के उपन्यासों में छोटे-छोटे वाक्य आए है जो स्वाभाविकता लाते है। उन्होंने संवादों के माध्यम से गंभीर और गूढ विषयों को नाटकीयता और रोचकता के साथ व्यक्त किया है। 'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास में नारी की त्रासदी को बड़े ही नाटकीय ढंग से आइलिन और प्रभा के संवादों के माध्यम से स्पष्ट किया है।

"कहां नहीं जीती वे ? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहां औरत के आँसू नहीं गिरे ?"[10]

"प्रभा, मिसेज डी को कोई समझा सकता, मुखौटा लगाकर नहीं हंसा जाता। सारी जिंदगी उसके सामने पड़ी है। वह मेरी बेटी है, अपनी बेटी को यूं तबाह होते कैसे देखूं?"

"क्या चाहने से मन दूसरे में लग जाता है?"

"कोशिश, मेरी बच्ची, कोशिश करनी पड़ती है। हर नए चेहरे में पुरानी स्मृतियों को जिलाए रखना पड़ता है, पर व्यक्ति को बदलना पड़ता है।"[11]

शिल्प की दृष्टि से संक्षिप्तता कथोपकथन का विशिष्ट गुण है। इसके साथ ही प्रश्न और उत्तर में सम्यक संतुलन भी आवश्यक होता है। प्रभा खेतान जी के संवादों की प्रमुख विशेषता संक्षिप्तता भी है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में कथोपकथन उत्कृष्ट है। उनके कथोपकथन औपन्यासिक जगत् में मौलिक उपलब्धि के उदाहरण है। उनके संवांदों की संक्षिप्तता, रोचकता, सांकेतिकता, आदि उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावोत्पादक बनाती है।

5.2.4. देशकाल-वातावरण-

देशकाल और वातावरण उपन्यास की रचना विधि का महत्वपूर्ण तत्व है। पात्रों के चरित्र को यथार्थ और जीवंत रूप प्रदान करने के लिए देशकाल वातावरण की नितांत आवश्यकता होती है। सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक उपन्यासों में इसका चित्रण अधिक महत्वपूर्ण होता है। उपन्यास की विषय वस्तु जिस युग, समाज, जीवन तथा काल से संबंधित रहती है उसका यथार्थबोध कराने के लिए तत्कालीन

वातावरण का चित्रण आवश्यक होता है। उपन्यासकार जहाँ पर वातावरण के चित्रण को साध्य बना लेता है, वहीं कथा का स्वाभाविक विकास रूक जाता है।

प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में विदेश एवं महानगरों को अपने कथानक का आधार बनाया है। 'आओ पेपे, घर चलें' विदेश के परिवेश को चित्रित करता है। 'तालाबंदी' में बंगाल के तथा 'छिन्नमस्ता' में संपन्न मारवाड़ी समाज के परिवेश को चित्रित किया गया है। 'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में भी मारवाड़ी समाज का चित्रण पाया जाता है। 'अग्निसंभवा' में चीन के राजनीतिक वातावरण को दर्शाया है।

प्रभा खेतान के कथानक उनके व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होने के कारण तथा अधिकांश परिस्थितियों में उनके सहभोक्ता होने के कारण वातावरण का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक और विश्वसनीय बन पड़ा है। अनेक स्थलों पर ऐसा आभास होता है कि लेखिका वातावरण की सूचना न देकर चलचित्र की भाँति पाठकों के सामने उनकी समग्र प्रस्तुति कर रही है। प्रभा जी के उपन्यासों में तीज, त्यौहार, वेशभूषा, रहन-सहन आदि भी देशकाल और वातावरण के अनुरूप ही पाए जाते हैं।

5.2.5. भाषा शैली-

उपन्यास की शिल्प-विधि की संरचना में शैलीतत्व का विशिष्ट स्थान है। इसी के द्वारा उपन्यासकार अपनी रचना को प्रभावी और आकर्षक बनाता है। भाव की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है, और उस माध्यम के प्रयोग की विधि का नाम शैली है। प्रभा खेतान के उपन्यास की भाषा सहज, सरल, सुबोध है। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग कर लेखिका ने उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत, मारवाड़ी, बंगाली आदि भाषाओं पर अपने अधिकार को प्रमाणित किया है। प्रभा खेतान भाषा की सहजता की समर्थक है। वे घटना वर्णन की कुशल निर्माता है। वे अपने शब्द शक्ति की सहायता से आँखों के सामने हू-ब-हू चित्र खड़ा कर देती है। प्रभा खेतान की भाषा शैली पर आगे विस्तार से वर्णन किया जाएगा। यहाँ पर उसका संकेत मात्र ही किया गया है।

5.2.6. उद्देश्य-

प्रत्येक उपन्यासकार विशिष्ट दृष्टिकोण से मानव जीवन का मूल्यांकन करता है। उपन्यासकार का मुख्य दायित्व है मानवीय चेतना के निरंतर गतिशील स्तरों को

यथार्थ रूप में रूपायित करना। वह समस्याओं के निदर्शन के साथ अपेक्षित समाधानों का संकेत भी करता है। साथ ही जीवन के आदर्शों और नैतिक मूल्यों की प्रति स्थापना भी करता है। उद्देश्य की दृष्टि से उन्हीं उपन्यास कृतियों को श्रेष्ठ माना जाता है जो युग जीवन के व्यापक संदर्भों को व्यक्त करती है और मानवीय चेतना के असंख्य रूपों को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी भूमिका पर स्थापित करती है।

प्रभा खेतान का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है। 'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास हमें विदेशी महिलाओं के जीवन का परिचय देता है तो 'तालाबंदी' व्यवसायिक क्षेत्रों में आनेवाली समस्याओं को चित्रित करता है। 'अग्निसंभवा' चीन की राजनीति एवं मार्क्स के विचारों को प्रस्तुत करता है। 'एड्स' समाज की गंभीर समस्या को उजागर करता है। 'छिन्नमस्ता' औरत के अस्तित्व के प्रति चल रहे संघर्ष का वर्णन करता है। 'अपने-अपने चेहरे' में नारी की नियति की क्रूरता को उभारा गया है। 'पीली आंधी' में मारवाड़ी समाज की व्यवसायिक वृत्ति को प्रस्तुत किया है और 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में नारी की नियति, त्रासदी, शोषण एवं अत्याचार को चित्रित किया गया है।

प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों की कथावस्तु का चयन बहुत सावधानीपूर्वक किया है। वे शिल्प की अतिरिक्त चर्चा किए बगैर कथा स्थितियों का दूर तक विश्लेषण करती हैं। उनके उपन्यासों में चरित्रों का विशेष महत्व है। भाषा संरचना तथा शिल्प की दृष्टि से उनके उपन्यासों में नयापन दिखता है। महानगरीय एवं विदेश की मिट्टी से प्रभा खेतान का अनुभव संसार बना है। विदेश भ्रमण कर प्रभा खेतान ने जिन कसौटियों का विकास किया है, वह स्त्री जाति की मुक्ति की घोषणा करती है। उनके उपन्यासों की स्त्री पात्रों ने पुरूष पात्रों के अंदरूनी रूढ़ संस्कारों को तोड़ दिया है।

प्रभा खेतान ने नारी पर हो रहे शोषण एवं अत्याचार को अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है। इसलिए आलोचना के क्षेत्र में वे एक 'बोल्ड रायटर' बनी है। वे नारी की पीड़ा को देखकर दुखी होती हैं। वे विसंगतियों को चीरती हुई सत्य के सूर्य का साक्षात्कार कराती हैं। जीवंत चरित्रों की अंदर-बाहर की व्यथा और दुविधा की महीन

रेखाओं तक को व्यक्त करनेवाली सक्षम भाषा और हृदय के तारों को स्पष्ट करने वाली कलात्मक रागात्मकता उनकी विशेषताएँ हैं ।

लोंजाइनस कहते हैं -"महान साहित्यकार ही शाश्वत साहित्य का निर्माण करते है।"[12] प्रभा जी एक ऐसी ही महान साहित्यकार है। उनका साहित्य सही मायने में शाश्वत साहित्य ही माना जाता है।

5.3 प्रभा खेतान का भाषा प्रयोग-

जब हम अपने मन के विचारों को बोल कर अथवा लिखकर व्यक्त करते है तो उस भाषा के बोलने या लिखने के ढंग को भाषाशैली कहते है। शैली का प्रभाव केवल कहने या लिखने के ढंग पर नहीं होता वरन विचार और भाव पर भी होता है। शैली को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए भाषा की शक्तियों लक्षणा और व्यंजना का सहारा लिया जाता है। क्योंकि कलाकार का उद्देश्य केवल अपनी बात व्यक्त कर देना नहीं तो उसे प्रभावोत्पादक ढंग से कहना या लोगों को प्रभावित करना है। इंदुप्रकाश पांडेयजी के विचार में-"सत्यत्व की पूर्णता को समझने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है भाषा। भाषा की संप्रेषणशीलता एवं अभिव्यंजना शक्ति वस्तु और भाव जगत को एक में ही गूँथ देती है। भाषा ही सत्यत्व की अनुभूति के करीब लाती है।"[13] भाषा का मूल प्रयोजन संप्रेषण और प्रत्यक्षीकरण है। प्रस्तुत और अप्रस्तुत के प्रभावों एवं संबंधों का वाक् संकेतों और प्रतीकों से प्रत्यक्षीकरण ही भाषा है। सशक्त भाषा में समर्थ एवं सक्षम वातावरण को प्रस्तुत किया जाता है। वातावरण निर्मिति के कारण कथावस्तु सजीव बनती है।

प्रभा खेतान ने सरल, सहज, पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने जानदार भाषा में ऐसी शानदार अभिव्यक्ति का परिचय दिया है कि जिससे उनके उपन्यास हिंदी जगत में बहुचर्चित हो गए है। भाषा के संबंध में प्रभा खेतान जी का दृष्टिकोण अत्यंत उदार और व्यवहारिक है। भाषा को लेकर उनके मन में किसी प्रकार का आग्रह अथवा दुराग्रह नहीं है। कोई भी भाव जिस भाषा की अपेक्षा करता है, वे उसी सहज और स्वाभाविक भाषा के कलेवर में उसे व्यक्त करती हैं। वे भाषा को एक ऐसे साधन के रूप में स्वीकार करती हैं, जो वांछित तत्व को अथवा वस्तु

रूप को सहज रूप से संप्रेषणीय बना सके। भाषा को धारदार और प्रभावी बनाने के लिए कहावतों और मुहावरों का उचित प्रयोग कर उपन्यासों को रोचक बनाया गया है और उसके जरिए जिस वातावरण का निर्माण किया गया है वह स्वयं हिंदी उपन्यास क्षेत्र के लिए एक नया मुहावरा बन गया है। प्रभा खेतान जी ने अपनी भाषा को सीधे जन जीवन से उठाया है। उनकी भाषा विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की यथार्थ पहचान प्रस्तुत कराने में पूर्णतया समर्थ है। उसमें अपनी स्वाभाविकता के साथ असीम रचनात्मक सामर्थ्य भी विद्यमान है। उन्होंने सूक्तियों और व्यंजनात्मक शब्दों से अपनी भाषा को समृद्ध और सार्थक बनाया है। शब्दाडंबर रहित सीधे शब्दों में कही गई बात ही सहज होती है। प्रभा खेतान की भाषा में सहजता है। वह किसी भी बात को घुमा-फिरा कर कहने की अपेक्षा सीधे-सीधे कह देती है। उनके भाषा के संबंध में कृष्णा जाखड़ जी कहती है-"अपने भावों को बिना किसी लाग-लपेट के कहना उनकी विशेषता है।"[14] उनकी भाषा की सहजता के कारण से पाठक उनको पढ़ता ही नहीं, बल्कि उनके भावों के साथ बहता है। उनकी भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, बंगाली, मारवाड़ी, संस्कृत शब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ है। यहाँ उनकी भाषा से संबध्द हुए इन्हीं कतिपय मुद्दों पर विचार करना हमारा अभिष्ट है।

5.3.1. मुहावरे-

वाक्य योजना को सशक्त एवं गतिशील बनाने में मुहावरों का विशेष योग रहता है। मुहावरों का प्रयोग भाषा को शक्ति प्रदान करता है। रोचकता के साथ भाषा की संप्रेषणक्षमता भी कई गुना बढ़ जाती है। यही कारण है कि सभी लेखक मुहावरेदार भाषा के प्रयोग का प्रयत्न करते है। मुहावरों की विशेषता यह है कि वे अपनी संक्षिप्तता में प्रभावी अर्थ का वहन करने में समर्थ होते है। मुहावरों द्वारा भाषा में चमत्कारिक सौंदर्य की सृष्टि, भाषा में प्रांजलता, प्रवाहमानता और अभिव्यंजकता में वृद्धि होती है। मुहावरे आशय को प्रभावी बना देते हैं। प्रभा खेतान के उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरें उनके अर्थ संप्रेषण की क्षमता को बढ़ाते हैं। स्थिति का गांभीर्य, चरित्र का उद्घाटन, प्रभावी विचार पात्रों की आंतरिक स्थिति को प्रकट करने के लिए लेखिका ने मुहावरों का प्रयोग किया है। मारवाड़ी परिवार में जन्म लेने के कारण

उनके उपन्यासों में मारवाड़ी एवं राजस्थानी मुहावरे का आना स्वाभाविक है। उन्होंने भाषा के तेवर को प्रभावी बनाने के लिए असंख्य मुहावरों का प्रयोग किया है। उनके मुहावरे जीवन के सभी क्षेत्रों और समाज की सभी श्रेणियों से लिए गए हैं। उनके द्वारा अधिसंख्य रूप में प्रयुक्त किए गए कुछ मुहावरे नीचे दिए जा रहे है, जिनसे उनकी भाषा में रोचकता तथा स्वाभाविकता की वृद्धि हुई है।

- **आओ पेपे, घर चलें-**

खुशियाँ मनाना, मन चिड़चिड़ा जाना, किताबी कीड़ा होना, नजर आना, आवाज कानों से टकराना, ठिकाने लगाना, छातीं पर बैठना, चौंकना, रात आँखों में बीतना, मना करना, आँखें बरस पड़ना, ख्याल रखना, आँखें छलछला उठना, मितली आना, सर्वांग जल उठना, बौखला उठना, बोलती बंद होना, खिल उठना, चक्कर खाकर गिर पड़ना, हिम्मत बढ़ जाना, रूआंसी होना, गला फाड़कर रोना, पसीना-पसीना होना, दिल धक-धक करना, आँखें खुलना, चेष्टा करना, भा जाना, चल बसना, गला भर आना, जड़ से उखाड़ फेंकना, आशा न होना, आसमान की ऊँचाईयाँ छूना, जलती आँखों से देखना, बोझ लगना, दिमाग खराब होना, मखौटा चढ़ाना, मौत का सामना करना, भूत सवार होना, होश में आना, बाहों में समेटना, दिल उचट जाना, बदला लेना, चौकस रहना, अपने पैरों पर खड़े होना, आग कुरेदना, पिण्ड छुटना, नाक कटाना, बहाना करना, जिंदगी की मिसाल होना, नजर चुराना, कद्र करना, हैरत से देखना, राहत की साँस लेना, धमाचौकड़ी मचाना, कृतार्थ करना, तबाह करना, मौत के मुँह से बचना।

- **तालाबंदी-**

गर्व से छाती चौड़ी होना, सलट लेना, आँखें खुली रह जाना, तकदीर आजमाना, एक्केबारे खांटी सोना होना, घाटा लगना, अचकचाना, काम में मन लगाना, शह देना, भविष्य बिगाड़ देना, ठिकाने लगाना, दाहिना हाथ होना, दहाड़ उठना, आँखें उमड़ आना, बौखला जाना, चौपट करना, शामत आना, राहत की साँस छोड़ना, जुगाली करना, मात खाना, दहशत पैदा करना, नाक में दम करना, सलट जाना,

ठोंकरे खाना, जोखिम उठाना, नाक रगड़वाना, काबू में रखना, घूस खाना, पसीना-पसीना होना, छाती जलना, जीवन कृतार्थ होना।

- **अग्निसंभवा-**

पैतरे बदलना, मना करना, मन न लगना, बुक्का फाड़कर रो उठना, रट लगाना, रास न आना, कट कर रह जाना, बौरा जाना, अंजर-पंजर ढिले होना, समय पंख लगाकर उड़ जाना, धीरज टूट जाना, वचन निभाना, दंग रह जाना, आँख पकना, चैन से सोना, माथा पचाना, झल्ला उठना, पीठ में छुरा भोंकना।

- **एड्स-**

सुहाग उजड़ना, कुत्ते की मौत मरना, राहत की साँस लेना।

- **छिन्नमस्ता-**

नींद उचट जाना, मन लगाना, जलन होना, दहल उठना, आँखें छलछला आना, आँखें खुली रह जाना, सारा घर सर पर उठाना, विद्रोह कर उठना, फूट-फूटकर रोना।

- **अपने-अपने चेहरे-**

मुँह फूल जाना, दम घुटना, सहम जाना।

- **पीली आंधी-**

पौ फटना, फाटका करना, बर्दाश्त करना, अनदेखा करना, लिहाज करना, जिद पर अड़ना, सामना करना, अर्जित करना, ड़कार जाना, रास न आना, सहारा लेना, खिलखिलाकर हँसना, आँखें छलछलाना।

- **स्त्री-पक्ष-**

संयम रखना, आतंकित होना।

5.3.2. कहावतें-

साहित्य में काव्यमयी और चमत्कारपूर्ण उक्ति को सुभाषित कहा जाता है। इसके अंतर्गत कहावतें आती है। कहावतें लोकानुभूति का प्रमाण होती है। कहावतों में उस अनुभूति सत्य का निदर्शन होता है जो समाज के सांस्कृतिक जीवन में प्रमाणित

होकर सर्वमान्य होती है। कहावतों का प्रयोग अपनी शब्दगत संक्षिप्तता की प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए समर्थ होता है। ये मानव की मौखिक संपत्ति है। रचनाकार भाषा में लालित्य, चमत्कार तथा प्रौढ़ता लाने के लिए कहावतों का प्रयोग करता है। मुहावरों के समान कहावते भी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति और सौंदर्य को बढ़ाती है। डॉ.रामप्रकाश जी के अनुसार-"ऐसे लोककथन जो व्यवहार परंपरा में रूढ़ हो जाने के कारण भाषिक अभिव्यंजना का स्थायी उपकरण बन जाते हैं, लोकोक्ति (कहावते) कहलाते है।"[15]

कहावतों में गागर में सागर भरने की क्षमता होती है। उनमें जीवन सत्य बड़ी खूबी से प्रकट होता है। इसमें भावों की गंभीरता और मार्मिकता होती है। उसमें ऐसा युग सत्य निहित रहता है, जिसे हर देश-काल का समाज स्वीकार करता है। इन्हीं के कारण हम जीवन, नीति, धर्म, आचरण आदि के बारे में पूर्वजों के अनुभव से लाभान्वित भी होते है। श्रीलाल शुक्ल ने औपन्यासिक कथ्य की अभिव्यक्ति को कम शब्दों में सारगर्भित एवं प्रभावपूर्ण ढंग से कहने के लिए कहावतों का प्रयोग अनिवार्य माना है। हिंदी विश्वकोश के अनुसार अपने कथन की पुष्टि में शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी आड़ में कहने के अभिप्राय से अथवा उपालंभ देने और व्यंग्य करने आदि के लिए अपने में स्वतंत्र अर्थ रखने वाली जिस लोकप्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित संक्षेप एवं चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते है, उसे लोकोक्ति या कहावत का नाम दिया जाता है।

- **आओ पेपे, घर चलें-**

  "औरत जितना भी रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।"[16]

  "मुखौटा लगाकर नहीं हँसा जाता"[17]

  "खाली दिमाग शैतान का घर"[18]

- **तालाबंदी-**

  "जिस हांडी में भात देखेगा, वहीं हाथ मारेगा"[19]

  "जिधर हवा उधर पीठ"[20]

- **एड्स-**

"जान है तो जहान है"[21]

"बिल्ली के भाग से छीका टूटा"[22]

- **छिन्नमस्ता-**

"बाप से बेटा सवाया"[23]

"बांझड़ी कोई जाणै जापै री पीड़"[24]

"सुख से शांति भली"[25]

- **पीली आंधी-**

"त्याग में बड़ी शांति है।"[26]

"कोयले की दलाली में हाथ काला।"[27]

"दान दायजा.. बजा छाती कुटया रह जा।"[28]

"उपजे ज्योंही खाते हैं, कायर क्रुर, कपूत।"

"औं परदेसां में खपे, सायर, न्यार, सपूत"[29]

5.3.3. सूक्तियाँ-

"सूक्ति जीवन का अनुकूल सत्य है।"[30] सूक्ति का अर्थ है-'उचित उक्ति', सुंदर अथवा चमत्कारपूर्ण वाक्य आदि। रचनाकार मानव प्रकृति को उसके विभिन्न सामाजिक और अध्यात्मिक संबंधों में समझता बूझता है। जब उसके मानस में किसी संबंध का विशेष कोण सामने आता है तो उसे वह बहुत कुछ निष्कर्षात्मक रूप में सामने रखता है, उसे सूक्ति कह सकते हैं। जो सूक्तियाँ सुंदर एवं नैतिकतापूर्ण होती है उन्हें सुभाषित भी कहा जाता है।

हिंदी में तुलसी, रहीम, वृंद, दीनदयाल गिरी, गिरिधर आदि अनेक प्रसिध्द सूक्तिकार है। उपन्यासकार प्रभा खेतान जी ने भी अपने जीवन-अनुभवों का सार सूक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया है। उनकी सूक्तियाँ अनुभूत निष्कर्षों पर आधारित होने के कारण अत्यंत प्रभावी और प्रेरक है।

- **आओ पेपे, घर चलें-**

''यीशू क्रॉस का बोझ रखता है ना, तब कंधे भी मजबूत करता है"।[31]

"आदमी में जानवर और जानवर में आदमी को देखना सीखे"।[32]

"दुनिया को झेलने के लिए तौह का कवच पहनना होगा।"[33]

"भय हमेशा अपराध बोध को जन्म देता है"[34]

"पौधा अपनी ही जमीन पर उगता है।"[35]

"बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है।"[36]

"ज्यादा पैसा समझदारी को कम कर देता है।"[37]

"यह दुनिया रहने लायक नहीं।"[38]

"प्यार एक उड़ता हुआ पाखी है। वह कभी एक ड़ाल पर बैठ नहीं सकता।"[39]

"औरत के दर्द के सामने सारे शब्द खुद ही मौन हो जाते है।"[40]

"अरे दुनिया से जितना डरोगी, वह उतना डराएगी। दुनिया एक फूला हुआ गुब्बारा है, उपेक्षा ले एक सुई चुभा दो, बस सारी हवा निकल जाएगी।"[41]

"जिंदगी को झेलना पड़े, तो जीने का मजा ही क्या"[42]

"जिंदगी की सारी कला और सृजन तो इसमें है कि तुम खुद पर बड़ी-से-बड़ी त्रासदी में हँस सकते हो या नहीं।"[43]

"सफलता की सीढ़ियों पर वहीं चढ़ सकता है, जो आगे और पीछे खींची जाती रस्सियों के तनाव में अपना संतुलन बनाए रख सके।"[44]

- **तालबंदी-**

"भाग्य तो तभी फलता है जब आदमी दूसरों को भी सहारा देता है।"[45]

"धन अपने साथ कितने झमेले ले आता है। पर हम लोग भी महत्वाकांक्षाओं की सीढ़ियों पर कहां रूक पाते है।"[46]

"सब लेने आते, कोई देने थोड़े आता।"[47]

"आदमी कितना असहाय है। वह स्वेच्छा से कुछ भी तो नहीं बदल पाता।"[48]

- **एड्स-**

"प्यार अपने आप में कितना मीठा होता है।"[49]

"सत्ता हमेशा व्यक्ति को भ्रष्ट करती है।"[50]

"अकेलापन एक बेबसी है। कुछ इसे ढोते है, मगर कुछ अपनी बेबसी का भी मकसद खोज लेते हैं, वे अकेलेपन में रस लेने लगते है।"[51]

"कभी अजनबी बड़े अपने लगते है।"[52]

- **छिन्नमस्ता-**

"आदमी प्रेम में प्रतिदान नहीं माँगता, सिर्फ समिधा बनकर हवन कुंड में स्वाहा हो जाता है।"[53]

"आत्मा ही आत्मा का गुरू हो सकता है।"[54]

"कभी-कभी एक-दूसरे की उपस्थिति का एहसास ही कितनी राहत देता है।"[55]

- **अपने-अपने चेहरे-**

"मौत का डर सभी को होता है"[56]

"जड़ से उखाड़ा हुआ पौधा गमले में कुम्हला जाएगा या फिर कद से बौना रह जाएगा।"[57]

"जो दबता है वही दबा सकता है।"[58]

"हर औरत को सहना पड़ता है। सहन करके जीना पड़ता है।"[59]

"जो अपने लिए सोच सकता है वहीं दूसरों पर भी रहम करता है।"[60]

"दुख में डूबा हुआ आदमी कभी निर्णय नहीं ले सकता।"[61]

"सुख कितना मादक होता है और दुख कितना जहरीला।"[62]

- **पीली आँधी-**

"सौमनस्य से ही लक्ष्मी फैलती-फूलती है।"[63]

"कृतज्ञता के आँसू बड़े कीमती होते हैं। और बहुत कम होते हैं।"[64]

"विश्वास करो मगर निरखो-परखो। ऐसे सीधे-सीधे मीठी चिकनी-चुपड़ी बातों में कभी नहीं आना।"[65]

"ऊपरवाला न्याय कब करता है। किसी को बहुत देता है तो किसी को कम।"[66]

"एक शांत आदमी ही अपने काम पर ध्यान दे सकता है।"[67]

"बिना धन के कोई इज्जत नहीं, कहीं कोई सुरक्षा नहीं।"[68]

"परिस्थिति के दबाव में आकर सबको झुकना पड़ता है।"[69]

"सुखी कौन है ? जो जिंदगी की पीड़ा और अभाव को भी गंभीरता से नहीं ले।"[70]

"नियति के साथ समझौता करना सीखो, सुख पाओगे।"

"अच्छा मिले तो हाथ पसार कर लो, बुरा मिले तो सर झुकाकर विपदा की लहर को गुजर जाने दो।"[71]

"ऋणी व्यक्ति को सपनें में भी सुख नहीं मिलता।"[72]

"जब आत्मविश्वास लड़खड़ाता है, तब भगवान पर से भी विश्वास लड़खड़ाने लगता है।"[73]

"इच्छा की कली को तोड़ देनी चाहिए नहीं तो जीवन में भोभर (आग) जलने लगेगा.. ।"[74]

"आदमी को प्यार और रोटी की कितनी जरूरत होती है।"[75]

"सारे बेइमानों के बीच एक ईमानदार आदमी जिंदा नहीं रह सकता।"[76]

- **स्त्री-पक्ष-**

"हर व्यक्ति स्पर्श सुख चाहता है। उस सुख से जब वह वंचित रहता है, तभी न कुंठाग्रस्त होता है।"[77]

"औरत को तो हमेशा पवित्र रहना चाहिए.. चरित्रवान रहना चाहिए।"[78]

"औरत की सही जगह उसका घर है।"[79]

"भगवान से प्रेम करो, उसके चरणों में ध्यान लगाओ। ध्यान करने से शांति मिलती है।"[80]

"जिसे आप बदल नहीं सको उसे स्वीकारना अच्छा है।"[81]

"तोड़े हुए को जोड़ना, बिखरे हुए को समेटना आसान नहीं।"[82]

"बड़े से बड़े दुख के बाद भी सुख के क्षण आते है।"[83]

"जिंदगी जब सहज होती है तभी औरत में आत्मविश्वास की आभा दिखाई देगी।"[84]

5.3.4. सार्थक-निरर्थक शब्द-

कभी-कभी बोलचाल की स्थिति को प्रभावशाली एवं स्वाभाविक बनाने के लिए सार्थक शब्दों के साथ निरर्थक शब्दों का भी सहारा लिया जाता है। पात्रों के वार्तालाप में स्वाभाविकता लाने के लिए प्रभा खेतान जी ने इन पात्रों द्वारा सार्थक-निरर्थक शब्दों का भी प्रयोग कराया है। पात्रानुकूल भाषा के कारण इन रचनाओं में सजीवता और स्वाभाविकता आ गई है। इस तथ्य की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरणों से हो जाती है।

इधर-उधर, देख-रेख, चहल-पहल, चौका-बासन, कढ़ाई-बुनाई, कोर्स-वोर्स, ऐसी-वैसी, हाव-भाव, रोने-धोने,रीति-रिवाज, खाना-वाना, दूर-दराज, गाहे-बगाहे, हाल-चाल, देख-रेख, काट-पाट, बची-खुची, उलट-पुलट, हक्का-बक्का, चाय-वाय, बीमारी-शिमारी, धंदा-पानी, बाप-दादे, मीटिंग-वीटिंग, कहा-सुनी, काम-काज, घाटा-वाटा, मार्क्स-वार्क्स, रंग-रोगन, रंग-बिरंगे, हाल-चाल, पैसा-वैसा, हिसाब-किताब, अनाप-शनाप, उलटने-पुलटने, डांट-डपट, रोना-धोना, छान-बीन, डाइटिंग-बाइटिंग, डिनन-पिनर, गठरी-मुठरी।

5.3.5. शब्द पुनरूक्तियाँ-

लेखक भाषा की शुद्धता के प्रति अत्यंत सावधान रहता है। फिर भी लेखक को उमड़ते भावों को सही शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता होती है। बातचीत के दौरान बोलने वाले की भंगिमा, स्वराघात, शारीरिक संकेत, मुखमुद्रा आदि से भी संप्रेषण का काम लिया जाता है। इसलिए व्याकराणिक प्रतिबद्धता स्वयं ही शिथिल हो जाती है। अनेक बार शब्दों को दुहराकर उनमें अर्थवत्ता की वृद्धि होती है। अथवा उनपर अतिरिक्त बल दिया जाता है। बोलचाल की भाषा में इस प्रणाली का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है।

प्रभा खेतान जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के संवाद या वार्तालाप को अत्याधिक सजीव एवं स्वाभाविक बनाने के लिए शब्द पुररूक्तियों का यथास्थान खुलकर प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त शब्द पुनरूक्तियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है :

बक-बक, अलग-अलग, मन ही मन, बार-बार, करीब-करीब, भौं-भौं, रोते-रोते, कहते-कहते, थोड़ा-थोड़ा, काट-काट, रोम-रोम, चलते-चलते, चूर-चूर, भरा-भरा, झुकाए-झुकाए, जल्दी-जल्दी, शुरू-शुरू, डरते-डरते, जोर-जोर, टप-टप, साथ-साथ, हौले-हौले, सुबह-सुबह, कभी-कभी, संग-संग, सीधे-सीधे, नए-नए, शुरू-शुरू, रात-रात, थर-थर, आगे-आगे, अच्छे-अच्छे, जगह-जगह, धीरे-धीरे, जोहते-जोहते, सम्हालते-सम्हालते, अपनी-अपनी, जल्दी-जल्दी, पसीना-पसीना,।

5.3.6. अंग्रेजी शब्द-

प्रभा खेतान एम.ए. तथा पीएच.डी की उपाधियाँ प्राप्त एक सशक्त लेखिका होने के साथ-साथ सफल उद्योजिका भी है। साथ ही वह व्यापार के सिलसिले में परदेश भ्रमण कर आई है। इस वजह से उनके उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दों का होना स्वाभाविक भी है। उन्होंने स्थिति की स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए अंग्रेजी भाषा के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित शब्दों और वाक्यों को देखा जा सकता है।

- **आओ पेपे, घर चलें-**

किचन, डांस, प्लेन, शॉपिंग, स्टुडेंट, एक्सचेंज, प्रोग्राम, एयरपोर्ट, युनिवर्सिटी, पार्ट-टाईम, कमिट, डियर, बालकनी, सेकिण्ड, ब्युटी, थेरापी, कोर्स, टाइपिंग, क्लिनिक, स्पीड, मेडिकल, ग्रुप, रिसेप्शन, प्रेटी, गर्ल, स्कार्फ, पेंटिंग, रिसीव, कार्ड, ऑफिस, आई कैम्प, टेबिल, फिट, रूड, इंटरव्यू, एरेंज, बेसमेंट, रेकार्ड, हेल्थ क्लब, स्टार्स, मैनेजर, मैनेजमेंट, पैकेट, रोमांस, एसिस्टैंट, वेजिटेरियन, हनी, प्रॉमिस ब्रेकफास्ट, डार्लिंग, क्लिप, एक्सीडेंट, सेक्रेटरी, रूटीन, एडजस्ट, सॉरी, लेक्चर, वाईब्रेशन बेल्ट, प्लीज, बोरिंग, सेशन, ट्रेनिंग, जिनमास्टिक, रियल बॉडी बिल्डींग, बिकिनी, वर्लफूल, हेल्थफूड, ज्वाइन, गिल्टी, अपसेट, सेन्सिटिव, फ्रस्टेटेड, फर्म, रैक, प्लेन, क्रीम, बेल्ट, ग्रेट, फैंटास्टिक, बिजनेस, प्रिंसेस, बैलेन्स, ड्रिंक्स, पेशंट, कस्टडी, असाइलम, कैरियर, रिजेक्शन, सिटिंग, साइकियास्ट्रिस्ट, फ्लाइट, ड्राइव, रेस्टोरैण्ट, रेसिंग, बोट, कम्पिटीशन, ऑर्डर, रियल, सेफ, ड्रामा, एमरजेन्सी।

- **तालाबंदी**

एक्सपोर्ट, सप्लाई, कमीशन, परसेण्ट, बोनस, स्टाफ, मैनेजमेण्ट, पोजीशन, एकाउण्टैण्ट, पावर, ज्वायन, प्रोडक्शन, सिक्योरिटी गार्ड, स्टोर कीपर, स्केल, ग्रॅंड, इन्वेस्टमेंट, पार्टनर, एजेंट, कटिंग सेक्शन, टर्न ओवर, इंटरकॉम, डीटेल, लेबर, पेमेंट, स्टॉक, रिमार्क, पॉकेट, लॉयल्टी, रिसीवर, शेड, नो एण्ट्री, इण्टेलेक्चुअल, नेशनल, इन्फॉर्मेशन, टाइम फिक्स, कान्फार्ड, स्पीड, डायलेक्टिक, सिन्थेसिस, क्लेम, सेटल, डबल, रिजिडिटी, रिपोर्ट, डॉक्यूमेण्ट, वाइरस इन्फेक्शन, इनस्लट, डिस्टर्ब, हयुमन, मैच्योर, ऐलंगेन्सी, इन्फ्लुएन्स, इग्नोर, हाईकोर्ट, स्ट्राइक।

- **अग्निसंभवा-**

एक्झीबिशन, स्टॉल, बैग, स्पेशल, इन्वाइरी, कस्टमर, ऐराइवल, ट्रॉली, कान्वेन्शन, पोर्च, स्टाइल, एसोसियेट, इमिग्रेशन, डबिंग, डिप्रेस्ड, इमोशनल, कैलकुलेटर, जर्नालिस्ट, एकाऊंट, एम्बुलेंन्स, आईडेंटिटी, पेमेंट, एयरकंडीशन, पेमेंट, लॉबी, एक्सलेटर, इमोशनल, ऑडिट।

- **एड्स-**

पैसेन्जर, चेयर, एयरपोर्ट, इमिग्रेशन, प्लेन, हाइजैक, स्क्रीन, एक्सक्युटिव, एनाउन्समेण्ट, सप्लायर, प्रोफिट, इन्फेकशन, एडरेस, मनी, बिजनेस।

- **छिन्नमस्ता-**

एयरलाइन, एक्सपोर्ट, एयरहोस्टेस, एम्ब्युलेंस, इमरजेंसी, कैनवास, कास्टिंग, सैंपल्स, होपलेस, कस्टडी, नारसिसिस्ट, हेल्दी एनिमल, साइलेंज, प्लीज, कोलकिंग, एक्जिट सॉलिसिटर, प्रॉमिस, गर्ल, ब्लैकमेल।

- **अपने-अपने चेहरे-**

डाइटिंग, ओन, सर्किल, डायनिंग टेबल, इंटरकाम, डिनर, ग्रेसफुली, रिसीवर, एडजस्ट, सेटल, सिच्युएशनल, क्लॅश, आकेपेशन, फैक्ट्री, एजेंसी।

- **पीली आंधी-**

फ्लॅट, सेंसेटिव, स्टुपिडिटी, केयर, लेटस, डुप्लीकेट, सॉलिड, केमिकल, पंकच्युअर, इमेजिन, स्लिम, एंटिक।

- **स्त्री-पक्ष-**

ड्रिंक्स, ड्राइंगरूम, मैथ्स, प्रोफेशनल, एप्रोच, एड एजंसी।

5.3.7. अंग्रेजी वाक्य-

'बाई, सी यू, गो दि अवे, हरी'[85]

"शी इज नो मोर।"[86]

"डेड लव हर सो मच, सो मच।"[87]

"यू हेट मी"

"यू फियर मी"

"यू आर इम्पासिबल"[88]

"प्लीज, हेल्प !"

"नाट माई जाब"

"यू आर नर्वस। आइ वान टू बी यो फ्रेंड, बट यू आर नर्वस।"[89]

"वी वील फक यू, द बास्टर्ड सन ऑफ विच..।"[90]

- **तालाबंदी-**

"गिव मी कॉन्क्रीट सजेशन"[91]

"यस ऑफ कोर्स, नो प्रॉब्लम, लेबर प्रॉब्लम, नो, नॉट, एट आल।"[92]

- **अग्निसंभवा-**

"गुडनाईट मैम ! स्लीप टाइट। वी आर आलवेज एट योर डिसपोजल"[93]

- **पीली आंधी-**

"दैट ओल्डी होली काऊ ? ओह ! आई हेट हर।"[94]

5.3.8. उर्दू, अरबी तथा फारसी के शब्द-

प्रभा खेतान जी ने पात्र, संस्कृति एवं काल के औचित्य को ध्यान में रखकर अपनी रचनाओं में उर्दू, अरबी तथा फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग बड़ी ही कुशलता एवं निर्भिकता के साथ किया है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

- **आओ पेपे, घर चलें-**

मसला, वाकिफ, बहस, जिक्र, सख्ती, फर्माना, बगल, दस्ताने, पेशाब, मकसद, रहम, बकवास, बेहूदी, रफतार, बयान, अजीब, खामोशी, कयामत, दहशत, मेहमान, दहलीज, फुर्सत, हवस, फिलहाल, तकलीफ, कम्बख्त, खासियत, तराश, माहौल, तलाकशुदा, खिदमतगार, मशहूर, माफिक, पेबंद, गुदाज, मुखातिब, मुसीबत, बेतरतीब, खिलाफ, मासूमियत, जबरन, संजीदा, खुशामद, खुमारी, नफरत, तमाम, जासूस, मजहब, हर्ज, शक, खामोश, एहसान, जबान, कयामत, तकरीबन, तबाह, ख्याल, मुखौटा, मजबूर, बेहद, हाशिए, हमदर्दी, रहम, औलाद, सिलसिला, हमदर्द, मेजबान, फर्माइश, इजाजत, इलाका, हादसा, एतराज, खानाबदोश, बदकिस्मत, बरबाद, भलमसाहत, सलीब, चहलकदमी, बेहिचक, हिदायत, नाज, हरजाना, मोहताज, गजब, शरारत, सुकून, बेशुमार, बदचलन, खुशमिजाज, इश्तहार, मासूमियत, बला, खौफनाक, खैरियत।

- **तालाबंदी-**

इज्जत, झमेला, इलाका, तनखा, मजाल, रूख, तरक्की, गुंजाइश, झमेला, फरमाते, करिश्मा, फिजूल, जबान, तकिया, कलाम, गुस्ताखी, तल्ख, वायदा, जुलूस, हिकारत, तरजीह, खीझ, इरादा, रूख, मात।

- **अग्निसंभवा-**

दस्ताने, गजब, मेहमाननवाजी, मसलन, मिजाज, महज, दहशत, फर्ज, नुमाइश, नजाकत, वाकिफ, जत्था, हैरत, बुजदिल, इल्जाम, हिफाजत, रहम, मकसद, जहन्नुम, गनीमत, औलाद, इस्तीफा, बदतमीजी।

- **एडस्-**

शरीफ, शोहरत, अफवाह, पैमाना, तहजीब।

- **छिन्नमस्ता-**

इल्जाम, आफत, बहस, जालिम, फलसफा, तलाक, हवस, रहमदिल, नजरिया, शागिर्द, शऊर, सलीका, बेशरम, तहजीब, मजाल, बेजुबान, जलील, लायक, नजाकत।

- **अपने-अपने चेहरे-**

बर्दाश्त, खूबसूरत, सिलसिला, अजीब, चिड़ियाखाना, मात, बहस, बकवास, तलाक।

- **पीली आंधी-**

मुसाफिर, मुखातिब, तनख्वाह, खातिर, तनखा, कायर, बुजूर्ग, नफरत, इज्जत, मर्ज, सबक, फिजूल, मसला, नौबत, साबित, तहजीब, हुकूमनामा, औलाद, नजराना, तकदीर, बेतकल्लुफ, फिजुलखर्ची, मर्तबान, मजाक, काबिल।

- **स्त्री-पक्ष-**

शैतानी, बदचलन, हिदायत, रौब, ख्याल, दकियानुसी, गुत्थी, बुर्जुआ, जलन, भद्दा, इजाजत, कमीज, मुश्किल, कमसिन, जुबान, बदमिजाज, औकात, जायदाद, फेहरिश्त, फिजुल, अहसास, बेहोश, अहमियत, बदकिस्मती, जलील, आतंकित, फक्र, बेदखल, महज।

5.3.9. मारवाड़ी भाषा के शब्द -

प्रभा खेतान जी ने अपनी रचनाओं में जनबेलियों का भी प्रचुर प्रयोग किया है। उन्होंने आवश्यकता नुसार अंग्रेजी, हिंदी, अरबी, फारसी के शब्दों के साथ आँचलिक शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है। उनका जन्म मारवाड़ी समाज में होने के कारण उनके उपन्यासों में मारवाड़ी भाषा के शब्द आ गए है। इन शब्दों के माध्यम से उन्होंने अपने युग और समाज के यथार्थ को बड़े प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है। निम्नलिखित शब्दों में इसे देखा जा सकता है :

- **पीली आंधी-**

जाणह भाया, सीखणो, चाव, जीमने, टाबर, भायला, जिक्रा, बीणनी गिनौड़ा छोरो, गीगा मुकलावा, जुड़ला, टिक्कड बाड़ी, घणा बिणज, भोभर, चोखी, हिवडा, भिरमा, मिनख, रोगली, लुगाई, मूंड़ा, दायजा, टिकड़ा, दुरिया, दिसावरी, बींद, बनड़ा, बन्ना, हुकुम सोणी, पुरबले, घणी हेली, मावड़ी, रातीजुगा, सायणीनी, करसी, चौको, खर्चो, सुरगवास, चंवरी, ओलामा, सवामणी, राखण।

5.3.10 मारवाड़ी भाषा के वाक्य-

"अरे कठ स देवगा पीसा ? बतो बड़ा सेठ जी था, रूपिया राखण जानता। आजकल का छोरा के करसी, काई समझ म नई आव। काल लाइसेंस बेचकर रूपिया दस लाख तिजारी म धरया था, अभी सुब से तो छह लाख ब गया-ब-गया। चोको खर्चो ही सेठानीजी लाख रूपिया मंगवा लिया।"[95]

"तू भी कोई धन्ध में धन्धों कर। महीना में दस-बीस हजार कमा भी लिया तो कुण सो धन्ना सेठ हो गये। तेर स बेसी तो इ बुढ़ाप म हम कमावा ह।"[96]

"छोरी माड़ी भोत है।"[97]

5.3.11. बंगाली भाषा के शब्द -

प्रभा जी ने अपना जीवन कलकत्ता में बिताने के कारण उनके उपन्यासों में बंगाली भाषा के शब्द भी पाये जाते है।

तालाबंदी-

देवगा,पीसा, रूपिया, छोरा, तिजरी, चोको, खर्चो, शोरकार

5.3.12. बंगाली भाषा के वाक्य-

"आर मारोआडिर बिए ते जाच्छ ना।"[98]

"ऐशोब काम ओ शेयाल राजा बुड़ो मोनीम कोरता इधर का बात उधर, किंतु एटि भालो छेले।"[99]

"ऐशो बाबा, ऐशो। छात्रो होये ऐशेछे। एइजोन्ने तुमी कोरे डाकछी।"[100]

"छाड़ तो ओ शब कथा, जतो सब भण्डामी.. ।"[101]

"बा रे कोबिता तो लैखे अमि नीजे देखे छिनू, आर तेमनी गानरे शूर।"[102]

"होयेछे, ऑनेक होये छे। एबार जा काजे बोस।"[103]

"ता बेश। आमारो एई प्रोथोम मारवाड़ी छात्रो। भालो कोरेई पड़ाबो ता सोमय?"[104]

5.3.13. बिहारी भाषा के वाक्य-

प्रभा जी ने 'पीली आंधी' और 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में बिहारी भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में घरेलू कामकाज के लिए जो नौकरानी रखी थी। उसके द्वारा इस भाषा का विशेष रूप से प्रयोग किया है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है :

"अरी दहया री, ई क भइल ? इ खून कहाँ हैं? अभई तो दसवाँ बरस लगा है.. अरे भगवान ! हमार बिटिया का इ का किए ?"[105]

"अरे जालिम, अरे कसाई, अपन सगी बहन को भी नहीं छोड़ा। हम तो ओकर हाल सब जानत हई। बहू जी का डर से कुछ बोला नहीं जात।"[106]

"सुन बिटिया ! हमार कहा मान और जिंदगी में ई सब बात कभी किसीसे जिन कहियो। आपन पति परमेसर से भी नाहीं। अऊर सब समय हमार साथ रहो। ना बिटिया, हम तोहको छोड़ कहीं नहीं जाउब।"[107]

5.3.14.बंगाली एवं मारवाड़ी मिश्रित वाक्य-

'तालाबंदी' उपन्यास में राजस्थानी के साथ बंगला का मिश्रण बहुत ही संतुलित और सर्जनात्मक रूप में हुआ है। यह कथ्य को स्वाभाविकता प्रदान करने के साथ-साथ प्रभावशाली भी बनाता है।

"अरे दे बाबू आपनी ?"

"हां, एई कोम्पानीर काजे ..।"

"काल-टाल केमोन ?"

"ओई एक रकोम चोलछे।"

"घाटा-वाटा लग रहा है क्या ?"

"घाटा ? ना शाम भाई। पूरा मैनेजमेण्ट का दोष। कोई देखेगा, नेई, बोइठेगा नेई, छोड़ी देखकर पांच बाजे उठ जायेगा।"[108]

5.3.15. लोकगीतों का समावेश-

अपनी संस्कृति को दर्शाने हेतु शादी ब्याह में गाये जानेवाले गीतों का प्रयोग लोकगीतों के अंतर्गत होता है।

'पीली आंधी' उपन्यास में प्रभा जी मारवाड़ी लोकगीतों के दर्शन कराती है। इसमें छोटी बीणनी राधाबाई के ब्याह के समय पीहर में उसकी बड़ी भावज बड़ा हुलस कर गाना गाती है-

"म्हारी ननदल बाई तो सुकुमार

ए नन्दोई म्हाने प्यारा लागो जी।"[109]

इसी उपन्यास की छोटी बीणनी कौवे का सुबह-सुबह अपनी खिड़की पर बैठा देख दिसावरी पर गये पति को जल्दी घर बुलाने के लिए गीत गाती है-

"उड़.. उड़ रे.. म्हारा काला कागला, जे म्हारा पीवजी घर आवे। खीर खांड को थालू परोसूं थारी सोने चोंच मढ़ाऊं रे कागा.. थाली जलम.. जलम गुण गाऊं रे कागा जलम.. जलम.. ।"[110]

5.3.16. संस्कृत के शब्द-

- **आओ पेपे घर चले-**

आगमन, भ्रमण, यात्रा, मुद्रा, समाचार, अवमूल्यन, अस्मिता, होड़, अस्मिता, असमर्थ, व्यवस्था, चिंता, सन्नाटा, निस्तब्धता, नक्षत्र, आत्मीय, व्यस्त, कुंडल, मध्यमा, दर्शन, जिज्ञासा, बहुमूर्तिपूजक, संरक्षण, मोहिनी, आज्ञा, चेष्टा, भोग, ऐश्वर्य, धन्यवाद, शृंगार, कृतघ्नता, रहस्य, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, मौलिक, वैभव, लज्जित, ग्लानि, संवेदनशीलता, ममता, इंद्रपुरी, सर्जन, सज्जन, संस्कारी, समर्थन, नैतिकता, व्यक्तिगत, शर्म, जुगुप्सा, निर्णय, स्मृति, छात्रवृत्ति, विश्लेषण, घृणा, आरक्षित, आत्मीय, गमन, विकल्प, आत्मपीड़न, अचेतन, क्षोभ, आवेग, द्योतक, प्रस्ताव, दंश, उक्ति, स्वयं, गृहदाह, पिशाच-लीला, निष्ठुर, सद्बुद्धि, बड़वानल, देहांत, मायावी, संबोधन, अनुरोध संपत्ति-मेरूदंड, तृप्ति, तन्मयता, अनुसंधान, निर्धारित, असंभव, कर्म-कांड़, सच्चरित्र, दौलत, आस्था, अर्धनग्न, कामदग्ध, प्राकृतिक, उपादान, यौवन, प्रसाधन, उन्माद, हिंसा।

- **तालाबंदी-**

प्रबंध कर्ता, संयोग, अतीत, असीम, दया, घृणा, मुद्रास्फीति, संयत, अवरोध, आवेश, नियंत्रित, पदत्याग, चेतना, कलुषित, आज्ञा, उल्लंघन, क्षोभ, अहंकार।

- **अग्निसंभवा-**

तर्क, स्वप्नद्रष्टा, तन्मय, संवेदना, निरंकुशता, नियुक्त।

- **एड्स-**

सम्भ्रान्त, लालायित, चेतना, अभस्त, निश्चल, कर्मकांड़।

- **छिन्नमस्ता-**

असम्पृक्त, घृणा, संस्कार, पुरातनपंथी, निष्पाप, स्वादिष्ट, अद्वैत, वेदांत, दर्शन, जगत, मिथ्या, कृतज्ञता, संभावना, विश्लेषण, निर्देश, आहुति, समर्पण, मिथक, उत्तेजना।

- **अपने -अपने चेहरे-**

कर्म, कर्मक्षेत्र, निरीहता, सर्वस्व, प्रतिमा, व्यवहारिकता, स्वीकृति, चिंतन, मुक्ति, नसीब, निष्क्रिय, संभ्रांत, संयमित, दैन्य, निरीहता, अहंकार, महत्वाकांक्षा, साक्षी, संवेदना, अस्तित्व, सर्वस्व, स्वावलंबी, असंभव, मर्यादा, आत्मविश्वास, आत्मीयता, शाश्वत, स्निग्ध, आर्तनाद, अर्थवत्ता।

- **पीली आंधी-**

संदेश, विद्रोह, चिंता, आशंका, कुकर्म, सौमनस्य, कृतज्ञता, अतिथि, धरम, अद्भुत, निष्ठा, उन्नति, स्वास्थ्य, नित्यकर्म, प्रयास, युक्तिहीन, दमन, सिद्धांत, विपदा, अद्भुत, लालसा, लज्जित, आत्मसम्मान, चेष्टा, आदेश, उत्कंठा, आपादमस्तक, स्मृतियाँ, प्रचलित।

- **स्त्री-पक्ष-**

सांत्वना, चरित्रवान, अनैतिक, विस्फोट, प्रकृति, सहृदय, व्यस्त, अनुनय, प्रस्ताव, विकल्प, वितृष्णा, तृप्त, रक्षक, वितर्क, तर्क, वैमनस्य, सार्थक, तन्मय,

अल्हाद, अतुलनीय, इंद्रिय, स्पर्श, तृष्टि, ईर्ष्या, आत्मरति, सर्वस्व, नियंत्रण, भावुकता, असमर्थ, देह्यष्टि।

5.3.17. भदेश भाषा के शब्द-

वैसे तो प्रभा जी उच्च परिवार में पली-बढ़ी थी। फिर भी प्रसंगों की आवश्यकता नुसार उन्होंने भदेश भाषा का प्रयोग किया है। पर उनकी मात्रा बहुत कम है। भले ही साहित्य में यह भाषा वर्जित है फिर भी भाषा में स्वाभाविकता एवं वास्तविकता लाने के लिए भदेस भाषा के शब्दों का प्रयोग प्रभा जी के उपन्यासों में दिखाई देता है। जिसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित है-

- **आओ पेपे, घर चलें-**

चुडैल कहीकी, बेहूदी कही की, बास्टर्ड, डायन, कुतिया, हरामजादा, फिलन्दरी, सिली गाल,सुअर कही का, शाविनिस्ट पिग, पुरूष अहंकारी।

- **तालाबंदी-**

सुअर का बच्चा, बोदमाश, हरामी का बच्चा, गधा, बेवकूफ, बैल, कुत्ते की औलाद, छिनाल, भाड़ में जाओ, अमीर जादियों, कुतिया, कमबख्त, पागल, डाईन।

- **अग्निसंभवा-**

हरामी, कायर, बुजदिल, नालायक।

- **छिन्नमस्ता-**

मक्कार, धुर्त, साला यू चीट बास्टर्ड, कायर, बुजदिल, यू मदर फकर, गो फक यो सेफ, राँड़, रंडियाँ, चुगलखोर, चंडाल, कसाई, हिजड़ा, व्हाट नॉनसेन्स, ब्लॅकमेलर, भगोड़ा, मिस्ट्रेस, साले रांड का, रांड का जाया, सन आफ विच, नमक हराम, बेहया, बेशरम, कुलटा। भाटा, पत्थर, बोकी, गधी, भंगन, मक्कार।

पीली आंधी-

छिनाल ।

5.4.18. आक्रोश जन्य भाषा के वाक्य-

भारतीय एवं पाश्चात्य स्त्री के पुरूष से स्थापित संबंधों में जहाँ एक ओर प्रेम का गीलापन है तो दूसरी ओर इस संबंध में दरार आने से स्त्री मन में उभरता विद्रोह

भी दिखाई देता है। पति-पत्नी के सुखद दाम्पत्य जीवन में उपस्थित नोक- झोंक के कारण प्रभा जी के नारी पात्र कई जगह विद्रोह की भाषा बोलते हुए नजर आते हैं।

'आओ पेपे, घर चलें' में डॉ.चोपड़ा का प्रभा के प्रति व्यवहार देखकर आइलिन क्रोध में आकर गाली देते हुए कहती है "बास्टर्ड इण्डियन। यह नहीं सोचा कि दूर से आई हुई अकेली लड़की के दिल पर क्या गुजरी होगी।"[111]

इस उपन्यास की मरील पति के संदर्भ में पूछने पर कहती है -"भाग गया साला, किसी बीस बरस की लड़की को लेकर। कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आज कल हजार डालर महीने का भेजता है, बास्टर्ड।"[112]

'अपने-अपने चेहरे' में रमा और मिस्टर गोयनका में जोरों की झड़प होती है तब बीच बचाव करनेवाली मिसेज गोयनका को रमा घायल शेरनी की तरह क्रोधपूर्ण शब्दों में कहती है, "देखो जीजी। मेरा और इनका संबंध अब नहीं चल सकता। मैंने बहुत सहन कर लिया। अब मुझसे सहन नहीं होता। इसके ऊपर भी यदि ये डाँट-डपट करे तो मैं यहाँ नहीं रहूँगी।"[113]

5.3.19. अर्थ व्यंजक विचारवान भाषा-

प्रभा जी के उपन्यासों में रोमांस के चित्रणों का प्राय: अभाव मिलता है लेकिन स्त्री विमर्श से संबंधित विशिष्ट लंबे-लंबे अर्थ व्यंजक विचार संपन्न वाक्यों की भरमार जरूर देखने को मिलती है। उनके उपन्यासों की कथा संवादों के बजाय चिंतन के आधार पर आगे बढ़ती है और पात्रों के चरित्रों को भी उभारती है। इसी वजह से उनके उपन्यासों में संवाद कम चिंतन अधिक है।

औरत के दर्द को लेकर 'छिन्नमस्ता' की प्रिया कहती है, ''औरत कहाँ नहीं रोती ? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए, या फिर सारे भोग ऐश्वर्य के बावजूद मेरी सासूजी की तरह पलंग पर रात-रात भर अकेले करवटें बदलते हुए। हाड़-मांस की बनी ये औरतें अपने-अपने तरीके से जिन्दगी जीने की कोशिश में छटपटाती ये औरतें। हजार सालों से इनके ये आँसू बहते आ रहे हैं।''[114]

'अपने-अपने चेहरे' की रमा विवाहित पुरूष से प्रेम करती हुई अपना मूल्यांकन करते हुए कहती है- ''पत्नी और प्रेमिका का स्थान एकदम अलग-अलग है। प्रेमिका पत्नी बन सकती है.. पीड़ा मैं अकेले नहीं झेल रही। वह भी पीड़ित है।''[115] इस प्रकार प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में विचारवान भाषा का प्रयोग कर पात्रों की मनस्थिति को मजबूत बनाती है।

शैली प्रयोग-

शब्दकोश के अनुसार शैली के अर्थ है-"चाल, ढंग, प्रणाली, रीति, प्रथा, वाक्य-रचना का विशिष्ट प्रकार।"[116] धीरेंद्र वर्मा के अनुसार-"शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।"[117] अभिव्यक्ति की रीति का नाम शैली है। शैली भाषा का व्यक्तिगत प्रयोग है। डॉ.विद्यानिवास मिश्र रीति का संबंध विशिष्ट पद रचना रीति से जोड़ते हैं।

आधुनिक काल में किसी लेखक या कवि की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट आदि के संयुक्त भाषा रूप एवं भाषा पद्धति को शैली कहा जाता है। शैली रचना के अंतरंग तथा बाह्य रंग दोनों को समर्थता के साथ उद्घाटित करते है। शैली तथा शिल्प उपन्यास के कथानक, चरित्र-चित्रण, परिवेश, भाषा के ढंग को प्रस्तुत करते है। जिससे उपन्यासों में नवीनता एवं प्रयोगशीलता का निर्माण होता है। शैली का संबंध उपन्यासकार की अनुभूति, अभिव्यक्ति और संवेदना आदि से होता है। स्पष्ट है कि शैली की कलात्मक उपलब्धि प्रतिभा से घिसकर बनाई गई स्थिति है। "शैली को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए भाषा की शक्तियों लक्षणा एवं व्यंजना का सहारा लिया जाता है। क्योंकि कलाकार का उद्देश्य केवल अपनी बात व्यक्त कर देना नहीं प्रभावोत्पादक ढंग से कहना अथवा लोगों को प्रभावित करना है।"[118]

शैली का संबंध लेखक के व्यक्तिगत शील से होता है। प्रत्येक व्यक्ति किसी विशिष्ट शैली का अनुसरण करता है। शैली तत्व उपन्यास कला के समस्त उपकरणों के प्रयोग करने की रीति है। यह उपन्यास कला का विशिष्ट पक्ष है। इसके अंतर्गत

भाषा पक्ष और रूप विधान पक्ष आ जाता है। शैलीगत वैशिष्ट्य लेखक की सर्जनशीलता और रचनात्मक प्रतिभा का प्रमाण होता है। दूसरों की शैली का अनुकरण करने वाले लेखक अपनी पहचान नहीं बना पाते। इसलिए अंग्रेजी उक्ति अतिप्रचलित है- 'Style is the man himself' रचना को पढ़कर रचनाकार को पहचान लेने की प्रक्रिया शैलीगत वैशिष्ट्य के कारण संभव होती है। वस्तुत: प्रत्येक रचनाकार अपनी शैली का नियामक होता है।

प्रभा खेतान की अपनी एक अलग मिश्रित शैली है। उनके उपन्यास फ्लैश बॅक में जाकर पाठकों के मन में उत्सुकता निर्माण करते हैं। इसके साथ उन्होंने विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक, नाट्यात्मक, पूर्वदीप्ति आदि शैलियों का प्रयोग किया है। इनके उपन्यास पाठक और लेखक के बीच सेतू बन गये है। कथा निरूपण की विविध शैलियाँ उनके द्वारा प्रयुक्त हुई है।

5.4.1. वर्णनात्मक शैली-

वर्णनात्मक शैली उपन्यास की सर्वाधिक प्रचलित एवं पारंपारित शैली है। इसमें उपन्यासकार का स्थान एक कलाकार जैसा होता है जो निर्लिप्त भाव से भाव का वर्णन करता चला जाता है। "इस शैली के उपन्यासकार को इतिहास की भाँति उपन्यास के चरित्रों तथा उनसे संबंधित घटनाओं का इतिवृत्तात्मक वर्णन अपनी कल्पना, अनुभूति एवं जानकारी के आधार पर लिख देना होता है। अंत में वह कभी-कभी एक तटस्थ द्रष्टा की भाँति अपना कोई-न-कोई निर्णय भी घोषित कर अपनी किसी न किसी मान्यता की स्थापना करने की चेष्टा भी करता है।"[119] इस शैली का क्षेत्र व्यापक होता है। इसके अंतर्गत भूत और वर्तमान दोनों काल आ जाते हैं। इसमें उपन्यासकार एक सर्वज्ञ लेखक के रूप में सामने आता है। वह एक सृष्टा की भाँति स्वयं को उपन्यास से पृथक रखते हुए भी सर्वत्र व्याप्त होता है और कथा में आयोजित प्रत्येक पात्र के मन की भावनात्मक अभिव्यक्ति करता है। प्रभा जी के लगभग सभी उपन्यासों में वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। उनके उपन्यासों के कथानक में प्रकृति चित्रण, गाँव-शहर, परिवार की स्थितियाँ आदि का वर्णनात्मक

चित्रण अधिक मात्रा में दिखाई देता है। प्रभा जी का वर्णनात्मक भाषा शैली में जो चित्र प्रस्तुत हुआ वह पाठक के सामने दृश्य रूप में साकार हो उठा है।

'आओ पेपे, घर चलें' में वर्णनात्मक शैली प्रयोग करते हुए लेखिका कैथी के कथन को प्रस्तुत करती है-"नहीं, मेरा प्रेम पर विश्वास नहीं उसने पहली पत्नी को छोड़ा। कल मुझे भी छोड़ देगा। मैं नहीं चाहती कि मैं मम्मी की तरह होऊं, जो डैड़ के आतंक में थर-थर कांपती रही थी। न मैं एलिजा की तरह दिवालिया होना चाहती हूं। मुझे मेरा मैं चाहिए, एक मजबूत व्यक्तित्व, जो सम्मान से सिर उठाकर खड़ा हो सके।"[120] 'आओ पेपे, घर चलें' में वाक्यों की सशक्त शृंखला है, जिसमें कहीं आइलिन के व्यक्तित्व को उद्‌घाटित किया है, कही 'बेवरली हिल हेल्थ क्लब का' विस्तृत विवरण तथा न्यूयार्क शहर का वर्णन भी पाया जाता है।

'तालाबंदी' उपन्यास का वर्णनात्मक शैली का प्रयोग दृष्टव्य है-"बिल्कुल नहीं। हमको व्यापार करना है। रूपया कमाना है, रफीक, । अस्सी प्रतिशत कारीगर फैक्ट्री बंद होते ही दूसरे कारखानों में लग जायेंगे। ये वे कारीगर हैं, जिनके पसीने की गंध एक-एक कमीज में बसी हुई है। ऐसे कारीगर वर्षों में तैयार होते हैं। रफीक, ऐसे कारीगर हमें नहीं मिलेंगे, हमारे जैसे मालिक उनको बहुत मिल जायेंगे।"[121]

'एडस' उपन्यास में लेखिका के पास बैठा व्यक्ति आल्पस की पहाड़ियों का वर्णन करता है-"लोगोंकी बस्ती से दूर। वहां रात बड़ी खामोश होती है। सुबह सिर्फ चिड़ियों की भाषा होती है और बहती हुई हवा जब अपना रूख बदलती है, तब मुझे आनेवाले मौसम के बारेमें पता चल जाता है। इन हवाओं ने जितना सिखाया है उतना तो टी.वी पर मौसमकी भविष्यवाणी मुझे कभी आश्वस्त नहीं कर सकी।"[122]

'पीली आंधी' में माधो की शादी का सुंदर और स्वाभाविक वर्णन है-"माधो के साफे में लगी हुई जड़ाऊं, किलंगी, गले का मोतियों वाला भारी कंठा, अनंत अंगूठी इन सारी चीजों की भी व्यवस्था भुआजी ने ही की थी। बाड़ी के लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। निकासी के समय माधो को लाल बागा पहनाया गया। मखमल में मढ़ी म्यान में रखी एक छोटी-सी कटार कंधे से लटका दी गई। कमर में गुलाबी कपड़ा लपेट कर एक नारियल बांध दिया गया। माथे पर बड़ा सुंदर तिलक लगाया

गया।"[123] 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास तो गृहस्थी के वर्णन पर ही टिका हुआ लगता है। प्रभा खेतान की वर्णनात्मक शैली सशक्त एवं सजीव है।

5.4.2. भावात्मक शैली-

भावात्मक शैली में वस्तु तथ्य से भिन्न भाव-सत्य की अभिव्यक्ति होती है। भौतिक सृष्टि में मन अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का इंद्रजाल है, परंतु साहित्यकार उनमें कुछ विशिष्ट क्षणों की मनःस्थिति, वातावरण, भावना, कल्पना, सुख-दुख आदि को लेकर अनेक भावों को एकत्रित करता है।

यह शैली उपन्यास में भावगत प्रवाह का सृजन करती है। इसके वर्ण्य विषय में एक प्रकार की भावात्मकता आ जाती है। इस शैली में पात्रों के मन की भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

प्रभा खेतान ने अपने 'आओ पेपे, घर चलें' इस उपन्यास में इस शैली का प्रयोग करते हुए पराए देश में जाने के बाद उसके मन की स्थिति का अत्यंत भावात्मक वर्णन किया है- ''धीरे से उठकर बालकनी में आ खड़ी हुई। चारों ओर बत्तियों की झिलमिलाहट। मैंने आंखे बंद कर ली। इन रोशनियों की चमक तो मैं हांगकांग से देखती आ रही हूं। आंखों के भीतर कलकत्ता की धुएं भरी रातें तैर गई। घर ? घर से बाहर कभी कहीं कुछ पराया नहीं लगा। आज यहां इस पराये देश में इतनी अकेली। भगवान तुम क्या यहां भी हो ? फूटती रूलाई को मैंने हथैलियों से दबा लिया गले में अटकी हुई सांस को बाहर निकलने में कुछ सेकिणड लगे, फिर भीगी आँखों से आकाश में झिलमिलाते नक्षत्रों को देखा। पराया देश। पराया घर। पराया आकाश। रात आंखों में बीती। ''[124]

'एड्स' उपन्यास में भी भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। सद्दाम के बर्ताव से जनता तो दुखी थे ही साथ ही पशु-पक्षी भी परेशान थे, जिसका भावात्मक शैली में वर्णन कुक्कू ने किया-"सॉरी प्रभा, मुझसे खाया नहीं जा रहा। देखो इस चिड़ियाको देखो। कैसे चोंच उठाये आकाशकी ओर देख रही है। और कुक्कू के आंखों में आंसू थे। लेकिन कुक्कू आदमी भी तो मर रहे हैं। बेगुनाह नागरिक, साधारण आदमी.. कोई माँ, कोई बच्चा, किसी की प्रेमिका।... मैं कह रही थी।

प्रभा तुम्हारी बात मानती हूँ लेकिन आदमी मरता है तो मारता भी है। क्या बुश और सद्दाम आदमी नहीं ? लेकिन ये बेचारे निरीह पशु-पक्षी इस चिड़ियाने किसी का क्या बिगाड़ा है ? और यह समुद्री गर्भमें रहनेवाला आदिवासी कछुआ ? वह फिर रोने लगी।"[125]

'छिन्नमस्ता' में भावात्मक शैली का प्रयोग करते हुए लेखिका ने प्रिया के मन के भावों को उजागर किया है-"मैं सारा अतीत भूल चुकी हूँ। पीछे से पुकारती हुई आवाजों के लिए मैंने कानों पर हथेलियाँ रख ली हैं और जिंदगी की लड़ाई में सक्रिय हूँ। हो सकता है, ऐसे ही एक दिन चुपचाप मृत्यु मेरा दरवाजा खटखटाए। मैं बेझिझक उसकी आहों की घाटियों में सो जाऊँगी।"[126]

'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में भावात्मक शैली का प्रयोग करते हुए लेखिका ने रमा के भावों को यहाँ स्पष्ट किया है-"पता नहीं, किस-किसकी जिंदगी बन रही है या फिर बिगड़ रही है। बस इतना जानती हूँ कि हर मुकाम पर जूझती हुई औरत कितनी बेसहारा है। वह धन कमा लेती है, नाम-यश भी कमा लेती है। लेकिन धन-यश से ही सब कुछ नहीं होता। जिंदगी में जरूरत होती है, मानवीय उष्मा और लगाव की। कोई अपना है, यह ख्याल भी कितना अच्छा लगता है।"[127] 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में भी वृंदा के मन की हलचल को भावात्मक शैली व्यक्त किया गया है।

इस प्रकार प्रभा खेतान ने भावात्मक शैली में नारी मन की भावनाओं का बखूबी वर्णन किया है। उन्होंने पात्रों के मन की स्थिति, वातावरण, भावना, कल्पना एवं सुख-दुख के क्षणों को यथार्थता के साथ चित्रित किया है।

5.4.3. चित्रात्मक शैली-

बिंबों के द्वारा ही साहित्यकार वस्तु, घटना, व्यापार,गुण-विशेषता, विचार, साकार तथा निराकार पदार्थों और मानस क्रियाओं को प्रत्यक्ष एवं इंद्रिय ग्राह्य बनाता है। बिंब किसी अप्रस्तुत वस्तु का मानसिक या काल्पनिक रूप है। इस शैली के माध्यम से पात्र प्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं।

'आओ पेपे, घर चलें' में लेखिका ने कैथी का वर्णन चित्रात्मक शैली में करते हुए उसकी जिंदादिली प्रस्तुत की है-"स्वतंत्र आत्म-विश्वासी औरत से मिल रही हूं,

जो प्रपात-सी झरती हुई जिंदगी की मिसाल है। बहुत ही भा गई वह। औरत हो, तो कैथी जैसी। जिंदगी कोई जिए तो कैथी जैसी। मस्ती में कोई नाचे-गाए, दोस्तों की जमघट जमाए तो कैथी की तरह!.. तीस-बस्तीस साल की वह बेहद जिंदादिल अमेरिकन औरत आज भी मन में बसी हुई है। कोई कुण्ठा नहीं, कोई महत्वाकांक्षा भी नहीं। किसी की जिंदगी को न उसे बनाने का शौक, न बिगाड़ने का। वह अपने में मगन।"[128]

अग्निसंभवा में चित्रात्मक प्रणाली का प्रयोग करते हए प्रभा जी आइवी का वर्णन करती है-"दो महीने में उसकी उम्र दस बीस वर्ष बढ़ी हुई लगी.. चेहरे पर तनाव, गले में सलवटें झुकी पीठ।"[129]

बिम्ब के माध्यम से प्रभा पाठक के दिमाग में एक थीम रखती है, शायद पाठक उससे यथास्थिति को समझ लेता है। इस विधा का प्रयोग प्रभा ने सायास नहीं किया, बस कथानक की मांग पर कहीं-कहीं अनायास ही होता चला गया। 'अपने-अपने चेहरे' में उसको लगता है-"एक पौधा जो बौना रह गया था, अब बढ़ने लगा है। रमा को अपनी जिंदगी में जरूरी और गैरजरूरी लड़ाई का भेद समझ में आने लगा था।"[130]

इससे पाठक के मस्तिष्क पर मूल तस्वीर उभरती है और इससे पूर्व एवं बाद की स्थितियाँ अपने आप समझ में आने लगती है।

5.4.4.प्रश्नात्मक शैली-

उपन्यासकार जब मन में उठनेवाले प्रश्नों का समुच्चय प्रस्तुत करता है तो यह प्रश्नात्मक शैली बन जाती है। पात्रों के मन में उठने वाले सवालों के समुच्चय को प्रश्नात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

"तुम कहां सोई ?"

फिर से हंसकर उसने कहा, मैं ऐसे ही सोती हूं"

"यह सोने-का कौन-सा तरीका हुआ ?"

"मुझे बिस्तर पर अकेले सोने से डर लगता है।"

"रोजर ने फोन किया ?"

"नहीं।"

"पेपे कहां हैं?"

"मेरे बिस्तर में सो रहा है""[131]

'आओ पेपे, घर चलें ' उपन्यास में उपन्यासकार ने प्रभा और आइलिन के संवादों को प्रश्नात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

'तालाबंदी' उपन्यास में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग करते हुए रंगबहादूर और श्याम बाबू के बीच हुए वार्तालाप को प्रस्तुत किया है-

"रंग बहादूर?"

"जी सर।"

"रात ठीक से गुजरी ?"

"जी सर! "

"फैक्ट्री कितने बजे बंद हुई ?"

"जी पांच बजें, आपके जाते ही।"

"क्यों ? श्याम बाबू की तेवरी में बल पड़ गये।"

"जी मालूम नहीं। वो कोई मीटिंग-वीटिंग किया।"

"कौन-सी मीटिंग? क्या बातें हुई ?"[132]

प्रभा जी के 'तालाबंदी' उपन्यास में प्रश्नात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है।

"मास्टर जी, आपसे एक अनुरोध है। कल शनिवार है न ?"

"ताहले कि कालके छुट्टी चाइछे ?"

"अरे, नहीं मास्टर जी मैं कह रहा था, यानी.. ।"

"की बलो ? थामले केनो ?"..

"एतो जोल्दी किशोर जोन्नो ? यूनियन भांगवे ? शे तुमी सीटू भांगते पारबे ना ?"

"क्यों ?"

"अच्छा, कालके ऐशो, बोलबो।"

"आप तब कल ज्यादा समय देंगे ?"

"आच्छा छात्रो तुमी तो ?"

"श्याम बाबू ने फिर दांत चियार दिए।"

"ता बेश। जाहा पारिबो ताहा कोरिबो।"

"मास्टर जी जर्दा चलेगा?"[133]

प्रभा जी ने अपने **'एड्स'** इस लघु उपन्यास में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग करते हुए सद्दाम के बारे में उनके मन में उठने वाले प्रश्नों को उभारा है-

"अरे यह सद्दाम हुसैनकी आवाज है.. देखो कैसे दहाड़ रहा है। शायद हां। और कुर्सी के नीचे कालीन की तरह बिछी हुई जनता ? वह हमेशा अपने नेताके हाथ में मशीनगन क्यों बन जाती है? क्यों वह तोपका गोला बन बरसने लगती है ? क्यों वह मिसाइलकी तरह छोड़ी जाती है ? क्यों ? आखिर क्यों? क्या केवल पेट्राका माइक मरेगा ? कोई इराकी बच्चा नहीं मरेगा ? पूछने पर जवाब था-

"सच्चा मुसलमान खुदाके लिए मरनेसे नहीं ड़रता। क्या खुदाने लोगोंसे कहा था रेतका बवण्डर बनो ?"[134]

'अपने-अपने चेहरे' में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग करते हुए लेखिका ने मिस्टर गोयनका और उनके दोस्त का वार्तालाप प्रस्तुत किया है-

"यह बात तो जँची नहीं। व्हिस्की और चलेगी ?"

''नहीं, अब तो उठूँगा।''

" अरे बैठ ना यार। हाँ, तो क्या करना चाहिए ?"

"कौन-सी बात का ? "वकील दोस्त के स्वर में रोष था।

"यही तलाक का..।"

"तुम तलाक नहीं देना चाहते ?"

"क्या बात बोल रहे हो ?"

"ठीक बोल रहा हूँ। तुम केवल सजा देना चाहते हो।"

"किसको ? "

"सबको खुद अपने आपको भी ।"

"तू साइकियाट्रिस्ट कब से हो गया ? या फिर व्हिस्की ज्यादा चढ़ा ली ?" [135]

'पीली आंधी' उपन्यास में प्रश्नार्थक शैली का प्रयोग करते हुए लेखिका ने पदमावती और माधो के बीच हुए प्रश्नों को उभारा है-

"मैं क्या करूं पद्मावती ?"

"बाबू। देवरजी ने आपसे कुछ रूपया मांगा था ?"

"हां क्यों ?"

"और आप सगे भाई को जरा-सी सहायता देने से नट गए ?"

"क्या बात कर रही हो, पद्मावती?"[136]

इस प्रकार प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के मन में उठने वाले प्रश्नों को उठाया है जो प्रश्नात्मक शैली में प्रकट हुए है।

5.4.5. नाट्यात्मक शैली-

नाट्यात्मक शैली को ही संवाद शैली कहा जाता है। संवाद नाटकों का प्राण है। उपन्यास में भी इस शैली का विशेष महत्व है। उपन्यास में चरित्र चित्रण का लगभग संपूर्ण श्रेय संवादों को जाता है। उपन्यासकार संवादों में नाटकीयता लाने के लिए नाट्यशैली का प्रयोग करता है।

'आओ पेपे, घर चलें' में प्रभा जी ने नाटकीय शैली का प्रयोग किया है।-"मैं दौड़ी उसकी ओर "हाय, मरील !" " उसने दबी आवाज में कहा, "तुम जाओ, तो यहां से। क्लारा देख लेगी, तो कयामत हो जाएगी।"

"क्या ?"

"तुम मिसेज डी की.. जाओ।" कहती हुई मरील तेजी से घूमकर दूसरी ओर चल दी। मैं स्तब्ध-सी वही खड़ी सोच रही थी।

छपाक की आवाज हुई यानी पानी में कोई गिरा और पूरा बगीचा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। क्या हुआ ? किससे पूछूं? तब तक मिसेज डी आ गई। चेहरा तमतमाया हुआ था।

"चलो, घर चलते है।" पीछे-पीछे लॉरेन्स था। "एलिजा! एलिजा! बैलेन्स मत खोओ। कल सारे सर्किल में इसी बात की चर्चा होगी।"

"नहीं, मैं नहीं रूकूंगी। बर्दाश्त की भी सीमा होती है। चलो प्रभा। और तकरीबन वह मेरा हाथ खींचती हुई भीड़ से ठेलने लगी।"[137]

'तालाबंदी' में भी नाट्यात्मक शैली के सुंदर उदाहरण है..

"अच्छा पार्टी भात का खर्चा देती है?"

"देती तो बहुत कुछ है। फायदा उठाने वाला होना चाहिए।"

"वह कैसे ?"

"किसी दिन फुर्सत से अड्डा मारेंगे, श्याम बाबू। आज तो जरा जल्दी में था। घर से निकल ही रहा था कि कानाई हांफते हुए पहुंचा। बोला, शेखर दा, जरा जल्दी चलिये, श्याम बाबू बुला रहे हैं।"

"अच्छा, ऐसी तो मैंने कोई जल्दी नहीं दिखाई थी। वैसे यही कहा था, शेखर दा आयें, तो जरा उन्हें लेते आना।"

"तब आज चलता हूं, फिर किसी दिन बैठेंगे?"

"अच्छा, शेखर दा, आप मार्क्सिस्ट है ?"

शेखर दा हो-हो करके हंस पड़े। हंसते-हंसते दोहरे हो गये। श्याम बाबू जरा अचकचाये।"[138]

'आओ पेपे, घर चलें' इस उपन्यास में आइलिन और प्रभा की बातचीत इस शैली में लेखिका ने प्रस्तुत की है-

"यह कमरा रोजर का है। रोजर, मेरा प्रेमी।"

"कहां है वह ?"

"आजकल शिकागो में है। बहुत व्यस्त रहता है। फुर्सत मिलते ही आएगा।"

"तुमने शादी क्यों नहीं की ?"

"रोजर मुझसे दस साल छोटा है और शादीशुदा है। उसकी बीवी तलाक नहीं दे रही। क्या करे बेचारा? "

"कितने सालों से ?"

"यही पिछले चार सालों से।"

मेरी फैलती हुई आंखों को देखकर उसने कहा, "क्यों सत्तर वर्ष की उम्र में औरत प्यार नहीं कर सकती ?"

"हमारे देश में तो नहीं।"

"वहां क्या करती है?"

"अपने बेटों, पोतों की देख-रेख और प्रभु का भजन।"

"और मौत की प्रतीक्षा ?"

"मरना तो सभी को है। इसके लिए इतनी दहशत क्यों ?"[139]

'तालाबंदी' के श्यामबाबू और रफीक के संवाद मालिक और नौकर की मानसिकता को व्यक्त कर रहे हैं-

"रफीक मियां !"

"बोलिये, सेठ !"

"यार ! श्याम बाबू ही बोले, "हम न कभी सेठ थे न होना चाहते हैं।"

"क्यों साहब ? हमारी नजर में आप सरावगी सेठ से कम हैं क्या ?"

"रफीक, एक काम कर सकोगे ?"

"जान हाजिर है, मालिक।"[140]

'एड्स' उपन्यास में प्रभा जी ने संवादात्मक शैली का प्रयोग किया है। यहाँ प्रभा जी और प्लेन में उनके पास बैठे अजनबी के संवांदो का उदाहरण दृष्टव्य है-

"क्यों हंस रही हो? वह पूछ रहा था। "

"बस, ऐसे ही।"

"सरदारनको देखकर ? जरूर हथियार निकाल रहें होंगे।"

"नहीं। मैं इस नाजुक मसलेपर कुछ भी कहनेके लिए तैयार नहीं थी।"

"देखना अब थोड़ी देर में हमारा प्लेन हाईजैक हो जायेगा।"

"क्या बकवास करते हो?"

"नहीं.. सब कुछ संभव है।"

"तब सरदार के बदले इराकी भी हो सकते है ?"

"या फिर फिलस्तीनी भी?"

"हां कोई भी। प्लेन हाईजैक में एक बार मैं रूँस गया था। मेरा मन नहीं किया कि उसकी कहानी सुनूं।"[141]

'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में मिस्टर गोयनका और रमेश की बातचीत संवादात्मक शैली में प्रस्तुत है-

"क्या हाल है? " उन्होंने बेटे से पूछा।

"सब ठीक।"

"कमाई ?"

"अच्छी चल रही है।"

"अच्छी या बहुत अच्छी, कुछ दम लगाओ, दौड़ो।"

"दौड़ तो रहा हूँ।"

"सबकी अपनी-अपनी दौड़ होती है।"[142]

प्रभा जी ने माधो और पद्मावती के बीच हुए वार्तालाप को 'पीली आंधी' उपन्यास में संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किए है-

"पत्नी ने पूछा-"क्यों तबीयत ठीक है ना ?""

"हां..हां।"

"लेकिन चेहरे पर बहुत थकान लग रही है। बाबू, इतना काम मत किया कीजिए।"

"क्या करूं पद्मावती?"

"थोड़ा काम देवरजी को भी संभालने दीजिए।"

"उसका काम में मन लगता तो रोना ही क्या था ?"[143]

इस प्रकार प्रभा जी के अपने उपन्यासों में नाट्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। ये संवाद कथानक, पात्र, परिवेश, भाषा आदि को प्रभावी, सहज, सुंदर, स्वाभाविक बनाने में सहायक हुए हैं।

5.4.6. व्यंग्य शैली-

'व्यंग्य' शब्द का अर्थ उसकी व्यंजना वृत्ति द्वारा प्रकट होता है। यह प्रभाव की दृष्टि से अधिक शक्तिशाली होता है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार व्यंग्य के उद्‌भव के मूल में वह शब्द-शक्ति है जिसे व्यंजना कहा गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है-व्यंजना शक्ति के कारण प्रकट होनेवाला साधारण से कुछ विशिष्ट अर्थ, गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने व्यंग्य की परिभाषा देते हुए कहा है-"व्यंग्य वह है जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है। व्यंग्य की यह प्रवृत्ति उसे सुधारक ही नहीं लाजवाब आक्रमक भी सिद्‌ध करती है।"[144] इस तरह व्यंग्यकार सुधारक ही नहीं, बल्कि आक्रमक भी रहता है। 'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास में प्रभा जी ने नारी के जीवन को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है-

"लेकिन तुम्हारे देश में भी औरतें त्रिशंकु होकर जी लेती है ?" "कहां नहीं जीती वे ? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहां औरत के आंसू नहीं गिरे?"[145]

"औरत कहां नहीं रोती और कब नहीं रोती। वह जितना भी रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।"[146]

"भारतीय स्त्री तमाम दर्द सहते हुए भी पत्नीत्व का हक नहीं छोड़ती।"[147]

'एड्‌स' उपन्यास के अंतर्गत प्रभा जी ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। लेखिका का जीवन एकाकी और निरस है इस पर उसकी दोस्त व्यंग्य करती है-"लोग मुझे समझाते है कि जिन्दगी कैसे जीनी चाहिए। दूधके झाग-सा उफनना मत, बस चूल्हेपर चढ़ी खौलती रहो। मैं खुदसे कहती हूं हां-हां, समझ गयी, बिल्कुल समझ गयी। कुछ मत करो, बस धीरे-धीरे खुदबदाती रहो। मगर चुप रहो। अपने बारे में चुप रहो नहीं तो सुननेवाले सुन लेंगे.. सबको पता है कि तुम अकेली हो। घर नहीं, गृहस्थीं नहीं, बच्चे नहीं..। मेरी विवाहित दोस्तों के शब्द- प्रभा तुम भाग्यशाली हो, प्रभुकी कृपा है। कितने लोगों को इतनी खूबसूरत जिन्दगी नसीब होती है।"

"हां ठीक कहा जा रहा है। सचमें ऐसी जिंदगी नसीब नहीं होती। इतना पैसा, इतनी पढ़ाई-लिखाई, इतनी शोहरत नहीं मिलती।"[148]

इस प्रकार प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन के गूढ़ एवं छिपे हुए अर्थों को व्यंग्य शैली द्वारा उजागर किया है।

5.4.7. विश्लेषणात्मक शैली-

उपन्यास में विचारों के विश्लेषण के लिए विशेष प्रकार से विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इस शैली को विवेचनात्मक शैली भी कहा जाता है। उपन्यासकार उपन्यास में पात्रों के चरित्र की मानसिकता, यथार्थ शोषण एवं परिस्थितियों तथा विचारों का विश्लेषण वैज्ञानिक पद्धति से करता है। विश्लेषण मूलतः वैज्ञानिक पद्धति है।

यह शैली तर्क प्रधान होती है। अमूर्त तथा सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिए यह शैली उपयुक्त होती है। अंतर्जगत के चित्रांकन में इस शैली का सर्वाधिक प्रयोग होता है। द्वंद्वात्मकता तथा उहापोह की स्थिति में उपन्यासकार मन की अवस्था का विश्लेषण करता है। जिन उपन्यासों में एक चरित्र प्रधान होता है अन्य सभी चरित्र गौण होते है, उन उपन्यासों के लिए विश्लेषणात्मक शैली महत्वपूर्ण होती है।

"पैसा क्या होता है ? पैसे वालों के चोंचले ! यह महल ! दबी जबान इसके-उसके बारे में चर्चा। मेरी जिंदगी की वह पहली पार्टी थी, जहां मैंने सुरा-सुन्दरी और पानी की तरह बहाया जाता हुआ पैसा देखा, पर जिसने कभी हीरा न देखा, उसके सामने आप हीरे के कितने भी कोण बनाते रहें, उसे वह एक चमकदार टुकड़े के अलावा और कुछ नहीं लगेगा।"[149] **'आओ पेपे, घर चलें'** में इस शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

'तालाबंदी' उपन्यास में श्याम बाबू के मन की द्वंद्ववात्मक स्थिति का वर्णन इस प्रकार हुआ है, "श्यामू हिम्मत रखो, शेखर भी इन्सान है.. और एक समझदार इन्सान है। सुप्रिय की तरह अहंकारी नहीं और न ही पीनू की तरह सुविधाजीवी। मैंने आज खोलकर सारी बातें नहीं कही होती ? मेरी गलती हुई। मैं कब कहता हूं कि मैंने गलती नहीं की, पर जरा-सी तो रस्सी खींची थी। मेरी नीयत में खोट कहां था। मैं

तो बस चाहता था कि यूनियन मेरे हिसाब से चले। क्या बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपनी मर्जी से युनियन लीड़र को कहकर स्ट्राइक नहीं करवा देती ? ऑर्डर नहीं है, स्ट्राइक करवा दो, आये दिन जूट बाजार वाले यही तो करते हैं।"[150]

'अग्निसंभवा' उपन्यास में आइवी के मन का दर्द विश्लेषणात्मक शैली में व्यक्त हुआ है, "प्राफा मेरा मन करता है मैं ऐसी ही किसी दूसरी छत पर खड़ी होकर चिल्लाऊं, कसाइयों तुम लोगों ने मेरे बेटे को मार दिया मैं चीखूं, इतनी जोर से, ताकि दुनिया मेरी पीड़ा समझे। मैं अपने दु:ख को समुद्र के लहरों पर सवार होकर वहां पहुंचाना चाहती हूं जहां मेरे दर्द को कोई समझ सके। सब भूल जाते है। सब लोग। कोई तो मेरे बच्चे को याद नहीं करता।"[151]

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रिया के मन के भावों को प्रभा जी ने विश्लेषणात्मक शैली में व्यक्त किया है, "मैं यह कभी नहीं समझा पाई कि मैं कौन हूँ, क्या चाहती हूँ? बस यही शिकायत करती रह गई कि क्या नहीं मिला। मेरे भीतर केवल आवाजें और आवाजें.. यह मिला, वह नहीं मिला। अभी खुश हूँ, दूसरे ही क्षण उदास। क्या सबकुछ ऐसे ही चलने दूँ सहज गति से ? यह मैं हूँ, अभी कुछ आदर्शो के सहारे आगे जाती हुई, कभी निराशा से पीछे लौटती हुई।"[152]

इस प्रकार प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के चरित्रों की मानसिकता का विवेचन विश्लेषणात्मक शैली में किया है।

5.4.8. पूर्व दीप्ति शैली (फ्लैश बॅक)-

जिसमें घटना या घटनाओं को तत्काल न दिखाकर किसी पात्र की स्मृति में लौटाकर दिखाया जाता है उसे पूर्व दीप्ति शैली कहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि इस तकनीक द्वारा एक ही घटना पर पात्र के दोहरे मनोभावों का प्रभाव सरलता से दिखाया जा सकता है। अतीत की परिस्थिति को जीता हुआ पात्र उन भावनाओं और विचारों का विश्लेषण करता चलता है जिनका तात्कालिक संबंध परिस्थिति से है। इसके अंतर्गत पात्रों की स्मृति से अतीत की घटनाएँ प्रदिप्त होती है। इसमें लेखक घटनाओं की सूक्ष्मता, मनोवैज्ञानिकता, पात्रों के मानसिक संघर्ष और तनाव की अभिव्यक्ति आदि को प्रस्तुत करता है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में लेखिका ने फ्लैश बॅक शैली का प्रयोग किया है। वह बार-बार अपने अतीत में चली जाती है- "अम्मा को इतना खुश मैंने कभी नहीं देखा था। बेटी की ससुराल से आए हुए एक से एक गहने-कपडे। मर्सिडीज गाड़ी में विदा होती बेटी। उन्होंने बस सल्लो जीजी से कहा-- ब्रेकफास्ट टेबल पर ही मैं काफी देर तक बैठी रह गई। पास की टेबल प्राय: खाली हो चुकी थी। तीसरी बार जब वेट्रेस ने आकर पूछा- "[153]

'पीली आंधी' उपन्यास में सोमा अपने अतीत में जाती है-"उसको अपना एक और अतीत याद आ गया। ऐसे ही एक दिन.." वह सुजीत के सामने खड़ी थी.. पीछे वाली खुली खिड़की से धूप की.."सुजीत ! मैं तुमसे प्यार करती हूं। मैं जानती हूं तुम विवाहित हो मैं भी तो विवाहिता हूं और हमारा यह अवैध संबंध दुनिया क्या कहेगी ? समाज क्या कहेगा ? तुम्हारी पत्नी मुझे धोखेबाज कहेगी ? यही न, लेकिन मैं क्या करूं सुजीत ? सब कुछ समझते हुए भी मैं अपने आपको रोक नहीं पा सकी। इसलिए यह सब कह रही हूं। "[154]

प्रिया को बचपन की पुरानी स्मृतियाँ याद आती, "हाँ, बाबूजी की मृत्यु के समय मैं साढ़े नौ साल की थी। उनके जाने के बाद घर की गिरती हुई आर्थिक अवस्था। ऊपर से दिखावे के सारे आवरणों को, झालरों को तोरणों को सजाकर यथास्थिति बनाए रखने की जी-जान से कोशिश में लगी हुई अम्मा। वे कहीं और कठोर और तिक्त हो गई थीं। तो कहीं अपने बच्चों के लिए बड़ी स्नेहिल भी..।"[155]

इस प्रकार प्रभा जी ने पूर्व दीप्ति शैली द्वारा अपने भोगे हुए यथार्थ को उपन्यासों में चित्रित किया है।

5.4.9. आत्मकथात्मक शैली-

प्रथम पुरूष की ओर से प्रस्तुत की जानेवाली सभी प्रकार की कथाओं को आत्मकथात्मक शैली के अंतर्गत लिया जाता है। इस शैली में उपन्यासकार स्वयं को एक पात्र के रूप में रखकर भोक्ता या द्रष्टा के तौर पर कथावस्तु को संगठित करता है। वह खुद निवेदक होता है। इस 'मैं' शैली को 'आत्मपदीय' शैली भी कहते है।

इसमें एक-एक घटना का विवरण, अत्यंत विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें उपन्यासकार उन्हीं घटनाओं परिस्थितियों तथा मनोदशाओं का वर्णन उपन्यास में कर पाता है जितना कि उसने स्वयं देखा, सुना अथवा अनुभव किया है।

'अरे, बाप रे। पेपे पास में बैठा हुआ मेरा पैर चाट रहा था। मैं हड़बड़ा कर उठी, पर पेपे वैसे ही बैठा रहा। बड़े कातर भाव से उसने सिर उठाकर मेरी ओर देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें बिना कुछ कहे भी बहुत कुछ कहती हुई लगीं.. मेरे पास बैठते ही वह और करीब सरक आया। मैंने डरते-डरते उसकी पीठ पर हाथ फेरा..। मैंने धीरे से कहा, "पेपे, घर की याद आ रही है।"[156]

लेखिका ने 'एड्स' उपन्यास में इस शैली का प्रयोग किया है।-"मुझे समझमें आ गया कि हमला हो चुका है। मैंने जो तीन फुटकी अपनी जगह काँटोंसे घेरी थी, मैंने जो सोचा था कि साढ़े आठ घण्टे यहां से फ्रैंकफ्रंटतक आरामसे गुजर जाएगा, वह संभव नहीं हो पाया।"[157]

'छिन्नमस्ता' में प्रभा जी ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है-"मेरे काम का एक ही सहारा थी वह। लेकिन बढ़ती हुई उम्र के बावजूद मेरी जिन्दगी में अब भी कुछ सपने बचे हैं, ताजा फूलों के रस में डूबे हुए, शहद की तरह मीठे, ओस से भीगे, गुलाब की खुशबू से तर, भोर के आकाश की तरह नीले और स्वच्छ। हाँ, मेरी जिन्दगी के सपने मेरे अपने हैं।"[158]

'पीली आंधी' उपन्यास में मिश्रित शैली का प्रयोग अधिक हुआ है। लेकिन माधो द्वारा उसके मन की पीड़ा को प्रभा जी ने आत्मकथात्मक शैली में उद्धृत किया है-"लेकिन मैं जीना चाहता हूं। सच कहा जाए तो जिंदगी तो जीने लायक अब हो रही थी और उनकी आंखों के सामने अपनी पत्नी का हंसता-मुस्कुराता चेहरा घूम गया। मेरी बीमारी। हां, इस कैंसर की बीमारी के बारे में उसको पता नहीं, लेकिन उससे कैसे कहूं? मेरे बिना वह कैसे रहेगी ? उसको कौन संभालेगा? ओफ्फ। मैं उसको संतान न दे सका.. मेरे से वह उम्र में इतनी छोटी है। उसका क्या होगा ? वह किसके सहारे जीएगी ? सांवर के बच्चे उसके अपने हैं, लेकिन फिर भी समाज में औरत कितनी असहाय है।"[159]

'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में लेखिका ने 'मैं' शैली का प्रयोग करते हुए वृंदा के मन के भावों को व्यक्त किया है-"कोई अतीत मेरा भी था। मेरे अपने शहर में.. उस समय तुम मेरे साथ नहीं थे। सुमित, आर्जव कोई नहीं था मेरे साथ। मैं अकेली थी। मैं क्या अपना सब कुछ भूल जाऊं। उखाड़ फेकूं ?"[160]

आत्मकथात्मक शैली द्वारा प्रभा खेतान ने अपने मन की भावनाओं को उद्घाटित किया है।

5.4.10. पत्रात्मक शैली-

पत्र शैली का प्रयोग करके विषयवस्तु विकसित की जाती है। पत्र के द्वारा लेखक अपना चिंतन, दृष्टिकोण, प्रतिक्रियाएँ, समझ, संस्कार, मर्यादाएँ, प्रतिभा आदि को व्यक्त करता है। लेखक उस पाठकों के सामने पत्र द्वारा अपने कथ्य को बेझिझक सरलता से और विषयवस्तु के अनिवार्य भाग के रूप में सहजता से प्रस्तुत करता है। 'पत्र शैली' औपन्यासिक विषयवस्तु की अनिवार्यता के साथ ही औपन्यासिक सर्जना का उपकरण होती है।

'अग्निसंभवा' में प्रभा जी ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। वह आइवी के बेटे वॉग के पत्र प्रस्तुत करती है-

"मां ! तुम अपने वॉग को हमेशा एक स्वप्नद्रष्टा कहती हो। हां मैं हूं। सूरज बस अभी डूब गया.. घिरता हुआ अंधेरा.. कल फिर सूरज उगेगा.. जमीन चाहे उसकी हो या मालिक की या फिर सरकार की। उसको तो बस उगती हुई फसल अच्छी लगती है क्योंकि अपने दिल में वह जानता है कि मैं दुनिया के लिए रोटी जुटा रहा हूं।

आज बस इतना भर।

कल फिर

तेरा वॉग।"[161]

''मां

पिछले चालीस वर्षो से सत्ता केवल वादा करती चली जा रही है कुछ कर नहीं पा रहीं और आज हालत यह है कि अपने को बचाने के लिए सत्ता के पास सेना और हथियार के अलावा कुछ भी नहीं।

मां ! घबरा मत, तेरे बेटे को उसकी जिंदगी का मकसद मिल गया है। खिलते हुए वसंत के साथ मेरा मन नाचता रहता है।''[162] इस प्रकार प्रभा जी ने पत्रात्मक शैली द्वारा पात्रों के मन के भावों को उजागर किया है।

5.4.11-ड़ायरी शैली-

डायरी व्यक्ति का निजी दस्तावेज है। उसमें वह उन्हीं बातों को लिखता है, जिन्हें वह किसी के सामने सामाजिक बंधनों के कारण प्रकट नहीं कर पाता। ड़ायरी शैली में जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ अंकित रहती है।

'पीली आंधी' में लेखिका ने इस शैली का प्रयोग करते हुए सुराणाजी के मन के भावों को उजागर किया है। वह अपने मन के भावों को जो किसी के सामने सामाजिक बंधनों के कारण प्रकट नहीं कर पाते थे उसे डायरी में लिख देते हैं-

"मैंने वर्षों तुम्हारे बारे में सोचा है। बहुत-बहुत देर, बिना किसी राहत के मैंने और कुछ भी नहीं चाहा एक तुम्हारे सिवाय, किसी के बारे में कुछ भी सोचने में मैं असमर्थ था। मेरी पूरी दुनिया तो तुम्हारे ही इर्द-गिर्द घूम रही थी, मुझे पता नहीं था कि, किसी को चाहना कितना कष्टकर है, आवेग कैसे अंग-प्रत्यंग को शिथिल कर देते हैं। क्या तुम समझ पाओगी? पद्मावती ? कि दिन-रात हर पल किसी के बारे में सोचना उसकी चाहत से घिरे रहना कैसा लगता है? मैं कह पाऊंगा ? उस पीड़ा को समझ पाऊंगा जब रातों में जागता रहा था, जब पहले-पहल तुमने कहा था-सुराणाजी कहीं कुछ मुझसे गलत हो गया है.. मैं मैं दिन-रात आपके बारे में सोचती रहती हूँ।"[163]

लेखिका ने डायरी शैली में अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत किया है।

5.4.12.काव्यात्मक शैली-

कथानक को सजीव, सुंदर तथा स्पष्ट करने के लिए काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है। संवेदनात्मकता और भावात्मकता के क्षणों में काव्यात्मकता का जन्म होता है। प्रभा जी भाषा के रूप को लेकर अधिक जागरूक नहीं रही हैं फिर भी उनके साहित्य में काव्यात्मक शैली दिखाई देती है।

'छिन्नमस्ता' की प्रिया बचपन में आनंदित होकर रेलिंग पर बैठी गौरेया से काव्यात्मक लहजे में बात करती है-"अले-अले गौलैया। बतातो-तू आज कहाँ-कहाँ होकर आई ? औल उस कौवे को देखकर क्यों डल गई थी? क्या खाती है तू ? बोल न मेली चिड़िया, मेली अच्छी सी-गौलैया ? अले बोल न भाई? तू भी नहीं बोलती।"[164]

इस प्रकार काव्यात्मक शैली द्वारा प्रभा जी ने कथानक को सरस, सजीव और सुंदर बनाने का प्रयास किया है।

5.4.13. एकरसता पूर्ण भाषाशैली-

भाषा की एकरसता से उसमें प्रांजलता की कमी व्यक्त होती है। प्रभा जी ने एकरसतापूर्ण भाषा शैली का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। उनके उपन्यास में जीवन संदर्भ बहुत नहीं है और जो है वे बड़े सीधे-साधे है। उनके उपन्यासों में वैविध्य और सूक्ष्मता की कमी होने के कारण भाषा में एकरसता सहजता से आयी है। खुशी और गम के अवसर पर प्राय: एक ही भाषा के शब्दों तथा वाक्याशों का प्रयोग अधिक हुआ है।

'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास की आइलिन किसी भी बात को कहते समय बार-बार 'हे मेरे जीसू की कसम' जैसे शब्दों का प्रयोग करती है-

"जीसू की कसम, आज तक बेचारे पेपे ने किसी को जख्मी नहीं किया...

"हे जीसू इस लड़की को सद्बुद्धि दे।"[165]

'अग्निसंभवा'में आइवी प्रभा को कई बार माँ न होने का एहसास दिलाती है, जो पाठकों में द्वेष की भावना निर्माण करता है।

'अपने-अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका पूरे उपन्यास में 10-12 बार स्त्री को झुककर चलने का संदेश देती है। जैसे-

"रमा को दबना नहीं आता। अरे औरत तो पैरों तले दबी हुई घास है।"[166]

"सहन करो बेटा। औरत की भलाई इसी में है।"[167]

5.5. उपन्यास शीर्षक एवं उसकी सार्थकता-

विस्तृत अर्थों में उपन्यास आधुनिक जीवन की गद्यात्मक गाथा है। यह मानव जीवन का बहुआयामी और विश्वसनीय महाकाव्य है। उपन्यास का शीर्षक सार्थक होता है। वह उसके कथ्य की पहचान होता है। उपन्यास का शीर्षक संक्षिप्त, अर्थपूर्ण एवं सारगर्भित होता है। प्रभा खेतान के उपन्यासों के शीर्षक अत्यंत सुंदर, विचारपूर्ण, चुस्त और दुरूस्त है। प्रत्येक उपन्यास का शीर्षक सार्थक है।

5.5.1 आओ पेपे, घर चलें-

इस उपन्यास में आइलिन के अल्सेशियन कुत्ते 'पेपे'के जरिए लेखिका ने अपने मन की स्थिति बयान की है। लेखिका स्टुडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत लॉस एंजेल्स (अमरिका) गई थी। वहाँ उन्होंने अमरीकन औरतों की जिंदगी का भयानक सच देखा। जिस तरह भारत की नारी त्रिशंकु जिंदगी जीती है। वैसी ही स्थिति उसे विदेश में भी दिखाई दी। विदेशी औरत भी जिंदगी भर रोती रहती है। इस उपन्यास की आइलिन अपने से दस साल छोटे विवाहित रोजर से प्रेम करती है। उसके दो पति और पाँच प्रेमी है। फिर भी वह प्यार की चाह में पेपे को पालती है।

मरील जो क्लारा ब्राउन, ग्रेटा गारबो एवं मिसेज डी का वार्डरोब मैनेज करती है, उसका पति उसे छोड़कर 20 वर्ष की लड़की को लेकर भाग गया है। उसे हरजाने में एक हजार डॉलर देता है। उसे लारा और नैन्सी दो बेटियाँ है। मगर माँ-बेटियों में प्रेम संबंध नहीं है जिससे उसकी छोटी बेटी लारा रिबेल हो जाती है। माँ-बाप के व्यवहार से दुखी उनके बच्चे गलत रास्ते पर चले जाते है।

क्लारा ब्राऊन न्यूयार्क की मानी हुई रईस है। फिर भी अपने क्रोधी स्वभाव के कारण पति से विभक्त रहकर डॉक्टर डी पर डोरे डालती है। मिसेज एलिजा (डी) पति का प्यार न मिलने पर भी पति को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। वह नींद की

गोलियाँ खाकर आत्महत्या का प्रयत्न करती है। मिसेज हेल्गा बेरी दंत-चिकित्सक की पत्नी होने के बावजूद अपना रेस्टांरेंट चलाती है। वह अपने बच्चों एवं पति से प्यार नहीं करती क्योंकि उसे लगता है। सब बच्चे बड़े होने पर उसे छोड़कर चले जाएँगे और पति उससे प्यार नहीं करता बल्कि उसपर दया करता है। कैथी इस उपन्यास की जिंदादिल पात्र है। फिर भी माँ और बहनों की हुई दुर्दशा देखकर वह खुद का स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती है।

इस उपन्यास के सभी पात्र प्यार के प्यासे हैं। प्यार उनके लिए आदत बन गया है। सभी अपनी आदतों के गुलाम हैं। यह देखकर लेखिका वापस अपने देश लौटना चाहती है। वह उस माहौल में नहीं रहना चाहती थी पर अपना मन वह किसके सामने हल्का करें तो वह पेपे से बातें करती है-''मैंने धीरे से कहा,''पेपे, घर की याद आ रही है। '' उसने सिर हिलाया। मैंने कहा, ''क्या करू, पेपे, क्या वापस चली जाऊं ?''[168] हेल्गा और मरील उसे विदेश में ठहराकर अपने काम में भागीदार बनाना चाहते हैं। फिर भी लेखिका वहाँ रूकना नहीं चाहती। इसलिए एक दिन पेपे से बात करते हुए वह कहती है,'आओ पेपे, घर चलें' क्योंकि पेपे को भी प्यार ही चाहिए था। उसे आइलिन की मृत्यू के पश्चात असाइलम में छोड़ दिया जाता है।

प्रभा इस उपन्यास के माध्यम से यह बताना चाहती है कि घर तो घर ही होता है। घर में मिलने वाला प्रेम, अपनापन और कहीं भी नहीं मिल सकता। परदेश में जाने वालों के लिए तो अपना देश ही उनका घर होता है। वे अपने देश को दिलोजान से चाहते है। इसलिए 'आओ पेपे, घर चलें' इस शीर्षक के माध्यम से लेखिका घर से होने वाले लगाव को जाहिर करते हुए घर का महत्व बताती है। इस प्रकार प्रभा जी का 'आओ पेपे, घर चलें' यह शीर्षक उचित एवं सार्थक प्रतीत होता है।

5.5.2 तालाबंदी-

इस उपन्यास में मारवाड़ी समाज के प्रमुख पात्र के रूप में श्याम बाबू है जो अपने व्यवसाय में सफलता पाना चाहतें हैं, लेकिन धन के लालच से अपने परिवारवालों को भी समय नहीं दे पातें। उनकी धन की लालसा की वजह से उनकी पत्नी, बेटा, माँ सभी उनसे रूठे हुए हैं। साथ ही फैक्ट्री में व्याप्त मजदूरों की समस्या

से भी वे परेशान हैं। वे इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास करते हैं। वे मास्टर हरिनारायण चट्टोपाध्याय से मार्क्सवाद को जानने का प्रयास करते है। वे मजदूरों को समझाने की कोशिश करते हैं। उनके सभी प्रयास विफल हो जाते हैं। शेखर दा और वकील भूतोड़िया से भी वह इस मसलें पर चर्चा करते हुए समाधान ढूँढने का प्रयास करते हैं लेकिन जब चारों ओर से निराशा ही पाते है तो अपनी व्यवस्थापकीय बुद्धि का उपयोग कर तालाबंदी के संबंध में सोचते हैं। वैसे उनका मन तो नहीं था पर परिस्थिति के सामने श्याम बाबू विवश हो जाते हैं। एक जगह उन्होंने कहा है-"डूबते जहाज में सबको अपनी जान की फिक्र है। शेखर बाबू ने यदि ना कह दिया, तो कल कलोजर का नोटिस देना होगा। यानी सारे ऑर्डर कैन्सिल। ओह नो, मैं लुट जाऊंगा। बरबाद हो जाउंगा। भगवान अब की बचा ले, बस एक मौका और दे, मैं अपना काम समेट लूं। बाज आया मैं फैक्ट्री चलाने से।"[169]

अंत में अपने फैक्ट्री में तालाबंदी का निश्चय करते हैं। इन झंझटों से मुक्ति पाते है। अतः उपन्यास का शीर्षक 'तालाबंदी' सार्थक ही प्रतीत होता है।

5.5.3. अग्निसंभवा-

'अग्निसंभवा' उपन्यास के माध्यम से प्रभा खेतान यह बताना चाहती है कि ''नारी में एक दैवी शक्ति होती है। अगर वह कुछ भी करने की ठान ले तो वह उसे पूरा करके ही दिखाती है।''[170]

चीनी महिला आइवी युंग जो चीन से भागकर हांगकांग आती है। अपना गुजारा करने हेतु संघर्ष करती है। अपने गुजारे के लिए टैक्सी ड्रायवर बनती है। अपनी अस्मिता की सीमाओं का अतिक्रमण कर धुंआ रहित अग्नि की लपटों को अपने भीतर स्वीकारती है। जो प्रज्वलित होकर एक नये हाशिए पर एक नया आकार बनाती है, ऐसी अग्निसंभवा के रूप में आइवी आयी है। वह चीन की राजनीति और क्रांति में अपने बेटे को खो देती है। वह शिव के पुत्र पर मातृत्व बरसाती है। वह ईमानदारी की एक मिसाल है। आइवी इस उपन्यास की अग्निसंभवा-सी प्रतीत होती है।

'अग्निसंभवा' अर्थात मुश्किल से मुश्किल कार्य को हर कठिनाईयों को पार करते हुए संभव बनाना है। जिसे आइवी ने कर दिखाया है। टैक्सी ड्रायवर से ब्रॉंच

मैनेजर तक का उसका सफर यही बताता है कि अनेक संकटों को झेलते हुए भी आइवी ने असंभव को भी संभव कर दिखाया है। इसलिए उपन्यास को दिया गया यह शीर्षक सार्थक प्रतीत होता है।

5.5.4. एड्स-

इस उपन्यास में लेखिका ने विदेशी परिवेश में परिवार किस तरह बिखर जाते हैं यह बताया है। एड्स की भयावहता से मनुष्य डरता है। प्लेन में सफर करने वाला सहयात्री लेखिका के जीवन में एक घटना की तरह आता है। लेखिका उससे बातें नहीं करना चाहती पर वह बार-बार लेखिका से बोलने की चेष्टा करता है। एड्स की बीमारी से व्यक्ति अकेला हो जाता है। वैसे ही इस उपन्यास के पात्र अकेलापन महसूस करते हैं। लेखिका कहती है, "मगर उसने उठते-उठते कार्ड पकड़ाया था। यह रहा..मिल गया, कार्डपर खाली एक नाम चमक रहा है एण्डू स्पेन्सर। कोई पता नहीं लिखा हुआ। कार्ड, उलटती हूं। नियोन रोशनी के उजालेमें कुछ शब्द चमक रहे है-"

नो टेलीफोन

नो एडरेस

नो मनी

नो बिझनेस

यह क्या ? हां उसने कहा था, मेरा कोई स्थायी घर नहीं। मैं अपना असली नाम नहीं बताना चाहता। मै प्राय: नाम बदलता रहता हूं.. ताकि कोई मुझे न पहचाने। मेरी पत्नी एड्सकी मरीज है। मैं खुद इस दहशतमें भागता रहता हूं कि कहीं मुझे एड्स न हो जाए।"[171] एड्स के कारण बिखरी जिंदगी का यथार्थ चित्रण करनेवाला एड्स शीर्षक सार्थक ही है।

5.5.5. छिन्नमस्ता-

'छिन्नमस्ता' यह शीर्षक ही स्त्री की सर्वयुगीन दुर्भाग्यपूर्ण नियति का प्रखर व्यंजक है। बुद्धिहीन मस्तक विहीन स्त्री सिर्फ देह है। वह सिर्फ भोग्या है। प्रभुसत्ता उसकी मेधा संवेदना को छिन्न-छिन्न करती रही है। बुद्धिहीन स्त्री ही पुरूष के लिए

वांछनीय है। हर भाषा में स्त्री में बुद्धि के अभाव का प्रतिपादन करने वाले मुहावरे पाये जाते हैं। जब कभी स्त्री की प्रतिभा चमकने लगती है है तो पुरूष का अहं उसके आडे आता है। इस प्रकार इस उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता उसके नाम में ही है, जो छिन्न अर्थात विछिन्न, अलग या डाली से टूट गई है, फिर भी अपने जीवन में मस्त है वह 'छिन्नमस्ता' है।

उपन्यास की प्रमुख पात्र प्रिया बचपन से अपने माँ के प्रेम से वंचित है। घर में रहने वाली दाई माँ के प्रेम में वह पलती है। उसे भाई-बहनें परेशान करते हैं। प्यार करने वाले पिता की मृत्यु के बाद बड़ा भाई उसका लैंगिक शोषण करता हैं। कॉलेज में प्रो.मुकर्जी उसका गलत इस्तेमाल करते हैं। उनके द्वारा वह ठगी जाती है। अपने काले रंग के कारण कोई भी उसे पसंद नहीं करता। अमरिका से पढ़कर आया नरेंद्र उससे शादी तो करता है लेकिन फिर भी प्रिया प्रेम से वंचित रहती है। परिवार धनसंपन्न होने के बावजूद उसे अपने मन के मुताबिक खर्च करने की सहूलियत नहीं। इसलिए वह अपने पैरों पर खड़े होने का निश्चय करती है। फिलिप और जूड़ी उसकी सहायता करते हैं। नरेंद्र उसे घर से निकाल देता है। गालियाँ देता है। उसका बच्चा भी छिन लेता है। फिर भी प्रिया अपनी जिंदगी की लड़ाई लड़ती रहती है। वह अपने मन को समझाती रहती है-

"एक विस्मृत अतीत को और कितना खरोंचूँ ? क्या सिर्फ मेरी ही जिंदगी में दर्द है ? जूड़ी ठीक ही कहती है। फिलिप और जूड़ी के मन में क्या कोई दर्द नहीं? एक लंबे समय तक आपसी तनाव को उन्होंने भी झेला। ये दौर हैं, आते हैं, चले जाते हैं समुद्र लहरों की तरह। आकाश में घिरते बादलों की तरह।"[172] इस प्रकार प्रिया 'छिन्न-भिन्न होकर भी 'छिन्नमस्ता' की तरह ही जीती हुई दिखाई देती है।

इस उपन्यास के शीर्षक के संबंध में डॉ.कृष्णा जाखड़ जी कहती हैं-"प्रभा खेतान ने भी 'छिन्नमस्ता' उपन्यास का शीर्षक मिथक के आधार पर रखा है। पौराणिक कथा के आधार पर छिन्नमस्ता दस महाविद्याओं में से पांचवी देवी है, जो अपना कटा हुआ सिर अपने ही हाथ में लिए हुए चलती है। खुला मुंह एवं बाहर निकली हुई जीभ के द्वारा अपनी गर्दन से निकलते हुए खून को चाटती है।"[173]

5.5.6. अपने-अपने चेहरे-

इस उपन्यास के हर पात्र का अपना अलग-सा चेहरा है। मिसेज गोयनका इस उपन्यास की एक नारी पात्र है जो अपने पति द्वारा प्रताड़ित एवं उपेक्षित है। उसका पति उसे पग-पग पर अपमानित करता है। उसकी सौत लाता है फिर भी वह पति को देवता की तरह पूजती है। वह गँवार एवं फूहड़ कहलाने के बावजूद भी अपनी सौत के प्रति मन में बड़ी बहन-सा प्यार रखती है। पति को उसका ख्याल रखने को कहती है तो दूसरी ओर वह उसे अपने जीवन में एक अड़चन-सी लगती है लेकिन बच्चों पर संस्कार ड़ालने हेतु, घर में मेहमानों की देखरेख करने हेतु वह अपनी सौत को बुलाती है। इस तरह इस उपन्यास की पात्र मिसेज गोयनका का चेहरा स्वार्थी व्यक्ति का चेहरा है।

दूसरी प्रमुख पात्र रमा जो अपना सर्वस्व मिस्टर गोयनका को सौंपती है। उनके बच्चों की देखभाल करती है। उनके बिझनेस में हाथ बटाँती है। बच्चों का भविष्य बनाती है। वह सबकुछ देकर भी अपना अकेलापन झेलती है। रमा स्वार्थी नहीं है। वह मिस्टर गोयनका से पत्नी का अधिकार नहीं माँगती फिर भी उनसे प्यार करती है। यह पात्र त्याग की मूर्ति प्रतीत होती है।

तीसरी पात्र रीतू भी यहाँ स्वार्थी एवं पति द्वारा प्रताड़ित है। अपनी जिंदगी बरबाद होने का आरोप वह अपने माता, पिता एवं रमा पर थोंपती है। उसका एक अलग-ही चेहरा है जो उसे अपने आप से ही नफरत करता हुआ लगता है।

मिस्टर गोयनका तो बेहद स्वार्थी है। वे पत्नी एवं रमा दोनों औरतों का प्यार चाहते तो है पर रमा के साथ उनका जो रिश्ता है उसे नाम नहीं देते। वे रमा को सहायक, बच्चों पर संस्कार करने हेतु एवं प्रेमिका के रूप में चाहते तो है पर स्वीकार नहीं करते।

इसी तरह प्रेमा, रमेश, उमेश एवं स्मिता इन सभी के अपने-अपने अलग चेहरे है। जो केवल अपने बारे में ही सोचते है। अतः उपन्यास का शीर्षक 'अपने-अपने चेहरे' सार्थक लगता है।

5.5.7. पीली आंधी-

'पीली आंधी' उपन्यास में 'आंधी' प्रतीक है-सब कुछ उजड़ जाने का। यह न आत्मकथा है न परकथा। इसमें कोई एक परिवार नहीं है, इसमें पूरा कबीला है.. संयुक्त परिवार है। मगर सब कुछ टूटता हुआ, उडती हुई रेत के ढूहें जैसे स्त्री-पुरूष और उनकी किरकिरांती हुए रेतीले क्षण। इसमें तीन पीढ़ियों की स्त्रियाँ चाची, बडी माँ और सोमा अपनी-अपनी बातें कहते हुए भी खामोशी की धुंध में सो जाती है। इन तीनों का जीवन पीली रेत की तरह आंधी में उड़ता है फिर भी एक चीज है जो सबको जिंदा रखती है, वह है प्रेम। चाहे वह राजस्थान की सुनहली रेत हो या बंगाल की हरित्तमा। यह प्रेम ही तो है जो हम सब की पहचान है। जो हमारे आपके सबके हृदय में धड़कता है और धड़कता रहेगा। लेखिका ने राजस्थान से लेकर बंगाल तक का मारवाडियों का संघर्ष पूर्ण सफर, पूर्वजों ने किया हुआ परिश्रम और आधुनिक पीढ़ी का ऐशो आराम, संयुक्त परिवार की तमाम खूबियाँ एवं कमियाँ नारी जीवन की विवशता को इस उपन्यास में चित्रित किया है। 'पीली आंधी' उपन्यास के सभी पात्रों की जिंदगी पीली आंधी में उड़ती एवं गिरती हुई लगती है। उसी तरह इस उपन्यास में प्रथम महायुद्ध के पश्चात वणिक समाज की हुई दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। रामेश्वर और किशन अपने परिवार को पीछे छोड़कर दिसावरी करते हुए यहाँ-वहाँ घूमते है। लेकिन राजा को उन्हें नजराणा देना पड़ता है। जब दिसावरी से आते है तो कुंवर मानसिंह सबकुछ छिनकर रामेश्वर को खत्म करता है। अपनी जान बचाकर किशन पत्नी, माधो एवं सांवर के साथ चुरू आता है। वहाँ शीलबाबू बिसेसरलाल उसकी सहायता करते हैं। माधो कमाने लगता है किंतु जब वह अपनी बदसूरत रोगली पत्नी को देखता हैं, तब उसके सपने पीली रेत बनकर आंधी में उड़ जाते है। बहुत परिश्रम से वह अपना व्यापार बढ़ाता है लेकिन सुख प्राप्त नहीं कर पाता। उसकी दूसरी पत्नी पद्मावती माधो के पश्चात देवर सांवरजी के परिवार को संभालती है लेकिन अपने प्यार सुराणा को नहीं प्राप्त कर पाती। अंतिम तीसरी पीढ़ी की सोमा विद्रोहीणी बनकर अपना सुख प्राप्त करना चाहती है फिर भी उसका जीवन क्षण-क्षण रेत में उड़ता-सा प्रतीत होता है।

इस उपन्यास के संबंध डॉ.राजकुमारी शर्मा ने लिखा है-"उनके यहाँ पुरानी औरत खुद अपने हाथों से अपना सिर काटने वाली और फिनिक्स की तरह पुनःपुनः अपनी ही आग से एक नए रूप में जन्म लेने वाली औरत है। प्रभा खेतान ने अपने उपन्यास 'पीली आंधी' में नारी का स्वतंत्र रूप प्रस्तुत किया है साथ ही नारी के अनेक रूपो की चर्चा करते हुए उसे पुरूषों के समान पाया है।"[174]

5.5.8. स्त्री-पक्ष-

प्रभा खेतान के 'स्त्री-पक्ष' में लेखिका ने स्त्री के पक्ष को उभारा है। उपन्यास की प्रमुख पात्र वृंदा अपने पापा, चाचा एवं भाई से भी प्यार नहीं करती। वह हर वक्त एक घुटन भरी जिंदगी एवं असुरक्षितता महसूस करती है। उसे अपने स्त्री होने पर एक अलग एहसास होता जैसे-"वृंदा को अपने टांगों के बीच का दबाव समझ में आता, अनायास उसका हाथ वहां चला जाता.. और वह वृंदा ऐसा करती तो मानो सारे शरीर में कुछ घटता.. एक भयानक विस्फोट होता।"[175]

वृंदा में स्त्री सुलभ सभी बातें आती है। वह स्त्री की विवशता और पुरूषों के सामर्थ्य पर घंटो विचार करती है। उसके मन में आता- "इसलिए तुलसीदास ने स्त्री की तुलना ढोल, गंवार और पशु से की ? क्या इसलिए चाचा, चाची को मारते रहते हैं या फिर पड़ोसवाली आंटी इसलिए जलकर मर गई थीं।"[176]

वह अपने जीवन में पुरूष का अस्तित्व एक रक्षक के रूप में देखती है। इसलिए अनीश से प्रेम करती है लेकिन उससे नफरत भरे बर्ताव से वह सुजित की ओर आकर्षित होती है। वह कहती है- "स्त्री यदि अपना विकास चाहती है तो उसे पुरूष से संबंधित होना जरूरी है। यह एक मानवीय जरूरत है।"[177]

सुजित के साथ वह एक भारतीय पत्नी के रूप में रहती है। वह रिया और रचित को जन्म देती है। बच्चों में वह इतना मग्न होती है कि सुजित सुनिता के चक्कर में फँसा है। इसकी भनक भी उसे नहीं लगती है। उनकी पारिवारिक जिंदगी बिखर जाती है। वृंदा अपने आप को अकेला महसूस करती है। वह अपना बुटिक खोलती है। तलाक लेने से पहले वह पति से हरजाने में बड़ी रकम अपने काम के ऐवज में माँगती है। उसके जीवन में आर्जव आता है। लेकिन मुंबई में नौकरी लगने

पर वह भी उसे छोड़कर चला जाता है। वह सोचती है - "दर्द का यह रिश्ता तो औरतों के नाभी नाल से जुड़ा हुआ है।"[178]

इस तरह लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से नारी की पीड़ा घुटन, विवशता और उस पर हो रहे अत्याचार को व्यक्त किया है। इसलिए 'स्त्री-पक्ष' यह शीर्षक सार्थक है।

निष्कर्ष-

प्रभा जी के उपन्यासों की रचना सहज एवं वास्तविक धरातल पर हुई है। अपने अनुभवों की वास्तविकता के चलते कलावाद का मोह उन्हें ग्रसित नहीं कर सका। इसलिए उनके उपन्यासों का कथानक सजीव बन पड़ा है। उनकी भाषा में बौद्धिकता, अनुभव संवेदना तथा नई प्रयोगधर्मिता के दर्शन होते है। उनके साहित्य ने सहज एवं बोधगम्य भाषा व विशिष्ट शैली के साथ हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है।

प्रभा खेतान का साहित्य सामान्यजन से लेकर बौद्धिक वर्ग तक के लिए है। वे कहती है कि उनका लेखन साधारण-से-साधारण पाठक के लिए है। उनके साहित्य में स्थान, समय व पात्रों की स्थिति के अनुसार ही शब्द आते है। जहाँ स्थानीय शब्दों की भरमार है, वही विदेशी शब्द भी काफी संख्या में आए है। लोकोंक्ति, मुहावरे कहावते एवं लोकगीत स्थानीय संस्कृति को व्यक्त करते हैं। व्याकरण की दृष्टि से उनकी भाषा उत्कृष्टता के शिखर पर नहीं पहुँच पाई। अतः हम उसे पांडित्यपूर्ण भाषा नहीं कह सकते फिर भी सहज शब्दों में भावों के अनुरूप ढली हुई उनकी भाषा अपनी अलग पहचान बना पाने में अवश्य सफल रही है।

प्रभा खेतान का अथाह शब्द भंडार उनके साहित्य की थाती है। प्रभा का संपर्क बचपन से लेकर मृत्यु तक अनेक भाषाओं से रहा है। बचपन में परिवार में बोली जाने वाली राजस्थानी बोली, नौकरों द्वारा बोली जाने वाली स्थानीय बोली, बंगाली दोस्तों की बोली, शिक्षा का माध्यम हिंदी भाषा एवं व्यवसाय में देश-विदेश की संपर्क भाषा आदि के कारण प्रभा की भाषा में विविधता आयी हैं।

उनके साहित्य में जहाँ संस्कृतनिष्ठ शब्द मोती की तरह पिरोए गए है, वही देशी भाषाओं के शब्दों ने इंद्रधनुषी रंग भरे हैं। स्थान एवं स्थिति के अनुरूप शब्दों का सटीक प्रयोग प्रभा की रचनाओं को अधिक विश्वसनीय तो बनाता ही है साथ ही उनके शब्द ज्ञान से भी पाठक को अवगत कराता है। दार्शनिकता का पुट लिए कुछ क्लिष्ट शब्द बौद्धिक उत्कृष्टता को ज्ञापित करते हैं तो कुछ देहाती एवं बाजारू शब्द भी पात्रों के अनुरूप आए है।

प्रभा जी की भाषा में सहजता है। किसी भी बात को वे घुमा-फिरा कर कहने के बजाय सीधे-सीधे कह देती है। पाठक को वाक्य की गहराई में उतरने की जरूरत ही नहीं पड़ती। क्योंकि उसका अर्थ सतह पर ही मिल जाता है। प्रभा के उपन्यासों में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार हुआ है कि, कभी-कभी तो भ्रम-सा हो जाता है कि यह मात्र वाक्य ही है या इसमें कोई मुहावरा या लोकोक्ति छुपी है। लोकोक्ति और मुहावरे यथास्थान भाषा सौंदर्य को द्विगुणित करते हैं। प्रभा जी की भाषा जहाँ आम पाठक को रसास्वादन करवाती है वहीं बौद्धिक पाठक की चेतना को समृद्ध भी करती है। अतः प्रभा की भाषा कहीं भी बोझिल या उबाऊ नहीं है। लेखिका ने वर्णनात्मक भाषा शैली का प्रयोग कर अपने समय की परिस्थिति का सजीव चित्र अंकित किया है। सांकेतिक भाषा का प्रयोग कर हमें आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान रक्षा हेतु प्रेरित भी किया है। उन्होंने काव्यात्मक भाषा में दुःखपूर्ण क्षणों को व्यक्त किया है। उनकी संवाद शैली में स्वाभाविकता और सहजता है। उनकी आत्मकथात्मक शैली ने मन के भाव को उद्वेलित किया है। कही अशोभनीय शब्दों का प्रयोग भी है।

प्रभा जी ने अपने साहित्य में विविध शैलियों का प्रयोग कर अपनी भाषा में चार-चांद लगा दिए है। प्रसंगानुरूप हर शैली अपने वैशिष्ट्य के साथ सामने आती है। प्रभा जी की शैली प्रशंसनीय है। वह उनके व्यक्तित्व और भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ.कृष्णा जाखड़, पृ-287
2. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ.संजय नवले- पृ-156
3. वही, पृ.156
4. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन डॉ.सुरेश बाबर, ,पृ.169
5. वहीं, पृ.169
6. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी,डॉ.अशोक मराठे, पृ.161
7. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी, डॉ.कृष्णा जाखड़, पृ.287
8. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन,डॉ.सुरेश बाबर, पृ.175
9. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ.संजय नवले, पृ.86
10. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.35
11. वही, पृ.62
12. शंकर शेष का रचना संसार, एस.एन.जाधव, पृ.13
13. उपन्यास विधा और विधान, इंदुप्रकाश पांडेय, पृ.14
14. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी, डॉ.कृष्णा जाखड़, पृ.237
15. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, डॉ.पी.वी.कोटमे, पृ.214
16. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.54
17. वही, पृ.62
18. वही, पृ.118
19. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.15
20. वही,पृ.20
21. एड्स, प्रभा खेतान, 'आज' पूजा वार्षिकांक, 1993, पृ.69
22. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.111
23. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.10
24. वही, पृ.130
25. वहीं पृ.138

26. वही, पृ.214
27. वही, पृ.290
28. वही, पृ.64
29. वही, पृ.31
30. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन, डॉ.सुरेश बाबर, पृ.212
31. 'आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.14
32. वही, पृ.19
33. वही, पृ.25
34. वही, पृ.31
35. वही, पृ.48
36. वही, पृ.52
37. वही, पृ.64
38. वही, पृ.69
39. वही, पृ.73
40. वही, पृ.75
41. वही, पृ.116
42. वही, पृ.129
43. वही, पृ.129
44. वही, पृ.148
45. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.28
46. वही, पृ.56
47. वही, पृ.66
48. वही, पृ.70
49. एड्स, प्रभा खेतान, 'आज' पूजा वार्षिकांक, पृ.56
50. वही, पृ.57
51. वही, पृ.70

52. वही, पृ.77

53. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.110

54. वही, पृ.101

55. वही, पृ.101

56. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.119

57. वही, पृ.126

58. वही, पृ.139

59. वही, पृ.172

60. वही, पृ.175

61. वही, पृ.187

62. वही, पृ.188

63. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.25

64. वही, पृ.27

65. वही, पृ.29

66. वही, पृ.32

67. वही, पृ.39

68. वही, पृ.45

69. वही, पृ.74

70. वही, पृ.99

71. वही, पृ.108

72. वही, पृ.111

73. वही, पृ.232

74. वही, पृ.233

75. वही, पृ.267

76. वही, पृ.286

77. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग-दूसरी कडी-14 फरवरी 1999, पृ.22
78. वही, 21 फरवरी, तीसरी कड़ी, पृ.20
79. वही-14 मार्च, छठी कड़ी, पृ.22
80. वहीं, 6 जून 1999, सत्रहवी कड़ी, पृ. 23
81. वही, 27 जून, बीसवीं कड़ी, पृ.18
82. वही, 27 जून, बीसवीं कड़ी, पृ.20
83. वही, 27 जून, बीसवीं कड़ी, पृ.21
84. वही 25 जुलाई, चौबीसवीं कड़ी, पृ.20
85. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.27
86. वही, पृ.66
87. वही, पृ.96
88. वही, पृ.102
89. वही, पृ.103
90. वही, पृ.139
91. प्रभा खेतान, तालाबंदी, पृ.92
92. वही, पृ.116
93. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस पत्रिका, मार्च 1992, पृ.56
94. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.163
95. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.9-10
96. वही, पृ.11
97. पीली आंधी,प्रभा खेतान, पृ.63
98. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.13
99. वही, पृ.13
100. वही, पृ.37
101. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.26

102. वही, पृ.26

103. वही, पृ.26

104. वही, पृ.36

105. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.16

106. वही, पृ.16

107. वही, पृ.17

108. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.12

109. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.6

110. वही, पृ.6

111. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.16

112. वही, पृ.24

113. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.38

114. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.189

115. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.200

116. उपन्यासकार मधुकर सिंह, डॉ.संजय नवले, पृ.157

117. वही, पृ.157

118. कथाकार शिवानी व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ.कृष्णा श्रीवास्तव, पृ.108

119. उपन्यासकार मधुकर सिंह,डॉ.संजय नवले, पृ.157

120. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.148

121. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.60

122. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक, 1993, पृ.69

123. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.60

124. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.9

125. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक, 1993, पृ.71

126. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.192

127. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.186

128. आओ पेपे, घर चलें,प्रभा खेतान, पृ.105

129. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1992, पृ.56

130. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.82

131. आओ पेपे, घर चलें,प्रभा खेतान, पृ.37

132. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.11-12

133. वही, पृ.45

134. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा, वार्षिकांक,1993, पृ.69

135. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.61

136. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.115

137. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.52

138. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.24-25

139. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ17-18

140. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.60

141. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा, वार्षिकांक, पृ.73

142. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.51

143. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.115

144. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, श्री.पी.वी.कोटमे, पृ.224

145. आओ पेपे, घर चलें,प्रभा खेतान, पृ.35

146. वही, पृ.54

147. वही, पृ.74

148. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक 1993, पृ.67

149. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.52

150. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.111

151. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल, 1992, पृ.61

152. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.192

153. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.112-113

154. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.240-241

155. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.36

156. आओ पेपे, घर चलें,प्रभा खेतान, पृ.43

157. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा, वार्षिकांक 1993, पृ.66

158. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.191

159. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.114

160. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, 1 अगस्त 1999, आखिरी कड़ी, पृ.20

161. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1991, पृ.57

162. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, मार्च 1991, पृ.58

163. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.274

164. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.22

165. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.19

166. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.43

167. वही, पृ.26

168. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.43-44

169. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ.111

170. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मूल्य बोध, डॉ.राजकुमारी शर्मा, पृ.137

171. एडस, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक, पृ.86

172. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ.179

173. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ.कृष्णा जाखड़, पृ.297

174. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मूल्य बोध, डॉ.राजकुमारी शर्मा, पृ.179

175. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता, सबरंग, 14 फरवरी 1999, पृ.22

176. वही, 21 फरवरी 1999 पृ-20

177. वही, 21 फरवरी 1999, पृ-24

178. वही, 24 जुलाई 1999, पृ.22